मूल्य : 20/- पंजीकरण संख्या : UPMUL/2016/76974 डाक पंजीकरण संख्या : UP/GBD- 249/2020-2022

वर्ष : ५ सितम्बर : २०२०, विक्रमी सम्वत् : २०७७
सृष्टि सम्वत् : १९६०८५३१२१, दयानन्दाब्द : १९७ अंक : ३

ओ३म्

।। कृण्वन्तो विश्वमार्यम् ।।

सत्य और ज्ञान से भरपूर आर्यसमाज नोएडा का मासिक मुखपत्र

विश्ववारा संस्कृति

मानवीय जीवन मूल्यों की संरक्षक पत्रिका

"सा प्रथमा संस्कृतिर्विश्ववारा"

नमो ब्रह्मणे नमस्ते वायो त्वमेव प्रत्यक्षं ब्रह्मासि। त्वामेव प्रत्यक्षं ब्रह्म वदिष्यामि ऋतं वदिष्यामि सत्यं वदिष्यामि। तन्मामवतु तद्वक्तारमवतु। अवतु माम्। अवतु वक्तारम्।।

ईश्वर का व्यापक ज्ञानस्वरूप पूज्य और सहज स्वभाव जानकर हम उसकी उपासना करें तथा जीवन में सदा सत्य का आचरण करें।

युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती
1824-1883 ईस्वी सन्
1881-1940 विक्रमी सम्वत्

पं गंगा प्रसाद उपाध्याय
(जन्म : 6 सित.)

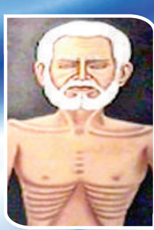

स्वामी विरजानंद
(स्मृति दिवस : 14 सित.)

महाशय राजपाल
(जन्म : 27 सित.)

सरदार भगत सिंह
(जन्म : 28 सित.)

सभी देशवासियों को शिक्षक दिवस और हिन्दी दिवस की हार्दिक बधाई व शुभकामनाएं

74वें स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर आर्य समाज, आर्ष गुरुकुल नोएडा के अधिकारी, आचार्यगण एवं ब्रह्मचारी

वन महोत्सव के अवसर पर वसुंधरा एंक्लेव दिल्ली में आर्य कै. अशोक गुलाटी उपप्रधान आर्षगुरुकुल नोएडा द्वारा स्वराज्य भारत के बैनर तले वृक्षारोपण किया गया व अन्यों को प्रेरणा दी गई।

ओ३म्

॥ कृण्वन्तो विश्वमार्यम्॥

विश्ववारा संस्कृति

मानवीय जीवन मूल्यों की संरक्षक पत्रिका

संरक्षक
श्री आनंद चौहान, श्री सुधीर सिंघल
प्रधान
श्री मनोहर लाल सरदाना

प्रबंध संपादक
आर्य कै. अशोक गुलाटी
संपादक
आचार्य डॉ. जयेन्द्र कुमार
सह संपादक
आचार्य ओमकार शास्त्री

प्रकाशक और मुद्रक
स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक डॉ. जयेन्द्र कुमार द्वारा वत्स ऑफसेट, मुद्दा हाऊस, सी-ब्लॉक, बारात घर, चौड़ा रघुनाथपुर, सेक्टर-22, नोएडा से मुद्रित एवं आर्य समाज, बी-69, सेक्टर-33, नोएडा, गौतमबुद्धनगर से प्रकाशित किया।

पंजीकरण संख्या : UPMUL/2016/76974

घोषणा पत्र संख्या : 153/2016-17, Postal Registration No.- UP/GBD- 249/2020-2022
Date of Dispatch 12 Every Month

मूल्य

एक प्रति	: 20/-	वार्षिक	: 250/-
पांच वर्ष	: 1100/-	आजीवन	: 2500/-

विदेश में वार्षिक शुल्क : 3100/-

अनुक्रमणिका

क्रम सं.	विषय	पृष्ठ
1.	संपादकीय : श्रावणी पर्व एवं श्रीकृष्ण...	2
2.	राष्ट्रीय जागरण के सूत्रधार महर्षि...	3
3.	भूत-प्रेत आदि की क्या वास्तव में...	4-5
4.	प्रेरक जीवन के धनी योगीराज...	6-7
5.	आर्य समाज जिस कृष्ण को...	7
6.	देश की आजादी में महर्षि दयानन्द...	8-9
7.	आत्मा की आवाज	10
8.	महापुरुषों को नमन...	12-13
9.	मनुष्य मांसाहारी या शाकाहारी...	15
10.	आर्यजनों के लिए आह्वान	21
11.	समाचार-सूचनाएं	22
12.	सुस्वास्थ्य : योग से ठीक होता है...	24

पाठकवृंद : कृपया स्वयं समाज एवं राष्ट्र के उत्थान के लिए 'विश्ववारा संस्कृति' के आजीवन सदस्य बनकर जीवन पथ को पुष्पित, प्रफुल्लित और प्रमुदित करें। आपका चित्र पत्रिका में प्रकाशित होगा। आपके बहुमूल्य सुझावों का हम स्वागत करते हैं।

लेखकवृंद से अनुरोध है कि रचना मौलिक एवं अप्रकाशित हो, रचना का लेखन स्पष्ट और सुपाठ्य हो। दो प्रतियां उस रचनाकार को भेज दी जाएगी, जिनकी रचना प्रकाशित हुई है।

विज्ञापन दर

पिछला कवर पृष्ठ	:	5100 रुपये
कवर पृष्ठ नं.-2	:	3100 रुपये
कवर पृष्ठ नं.-3	:	2500 रुपये
पूरा पृष्ठ अंदर	:	1000 रुपये
आधा पृष्ठ अंदर	:	600 रुपये

'विश्ववारा संस्कृति' में सभी पद अवैतनिक हैं। प्रकाशित विचारों से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है। सभी विवादों का न्याय क्षेत्र गौतमबुद्धनगर होगा।

संपादकीय कार्यालय
आर्य समाज, बी-69,
सेक्टर-33, नोएडा- 201301
गौतमबुद्धनगर, (उ.प्र.)
दूरभाष : 0120-2505731,
9871798221, 7011279734
9899349304
captakg21@yahoo.co.in

Web : www.noidaaryasamaj.org, E-mail : info.aryasamajnoida33@gmail.com

संपादकीय...

।।ओ३म्।।

श्रावणी पर्व एवं श्रीकृष्ण जन्माष्टमी

भारतीय संस्कृति में पर्वों का विशेष स्थान है। प्रत्येक पर्व जीवन में आनंद एवं उल्लास का एक साधन है। मानवीय जीवन को विषाद एवं निराशा से निकालने हेतु जीवन को अभिप्रेरित तथा गतिशील करने हेतु ऋषियों ने पर्वों को हमारे जीवन में समाहित कर दिया। भारतीय संस्कृति यूं तो स्वयं में अत्यधिक विलक्षण है किन्तु पर्वों के माध्यम से यह और विलक्षणता को प्राप्त होती है, हमारे दो आदर्श पुरुष संस्कृति के महान स्तंभ मर्यादापुरुषोत्तम एवं योगीराज श्रीकृष्ण महाराज। इन सभी की शिक्षा-दीक्षा गुरुकुलीय परिवेश में हुई। वैदिक शिक्षा को ऋषि जिस दिन से प्रारम्भ करते थे, उसे हम श्रावणी पर्व के नाम से जानते हैं, चूंकि यह श्रावण मास पूर्णिमा को मनाया जाता है अत: यह श्रावणी कहलाता है। हमें इस पर्व पर जीवन को स्वाध्यायशील बनकर व्यतीत करना चाहिए तथा जीवन में भौतिक उन्नति से ज्यादा आध्यात्मिक उन्नति पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए। उप यज्ञोपवीत के नवीनीकरण का भी महत्व, यज्ञोपवीत हमें पितृ ऋण, देव ऋण एवं ऋषि ऋण से जुड़े कर्तव्यों का स्मरण कराता है।

श्रावणी पर्व के ठीक आठवें दिन महायोगी श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के रूप में मनाया जाता है। विश्व को गीता का ज्ञान कराने वाले योगीराज श्रीकृष्ण महाराज सम्पूर्ण विश्व को कर्म करने का महान संदेश सुनाते हैं- **"कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन। मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते सङ्गोऽस्त्वकर्मणि।।"**

योगीराज श्रीकृष्ण जी के लिए महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने सत्यार्थ प्रकाश में लिखा है-योगीराज श्रीकृष्ण जी का इतिहास महाभारत में अत्युत्तम है। जन्म से मरण पर्यन्त उन्होंने कोई भी बुरा आचरण किया हो ऐसा नहीं लिखा है। हमें योगीराज श्रीकृष्ण जी के जीवन से यही प्रेरणा लेनी चाहिए कि हमेशा सत्य और धर्म का आचरण करें। जीवन को स्वाध्याय यज्ञ के द्वारा पवित्र एवं सरल बनाए- **स्वाध्यायान्न प्रमदितव्यम् धर्मं चर, सत्यंवद्। यान्यस्माकं, सुचरितानि तानि त्वयोपास्यानि नो इतराणि-तैं उ. शिक्षावल्ली।**

■ **आचार्य डॉ. जयेन्द्र कुमार**

मानवीय जीवन को विषाद एवं निराशा से निकालने हेतु जीवन को अभिप्रेरित तथा गतिशील करने हेतु ऋषियों ने पर्वों को हमारे जीवन में समाहित कर दिया। भारतीय संस्कृति यूं तो स्वयं में अत्यधिक विलक्षण है किन्तु पर्वों के माध्यम से यह और विलक्षणता को प्राप्त होती है, हमारे दो आदर्श पुरुष संस्कृति के महान स्तंभ मर्यादापुरुषोत्तम एवं योगीराज श्रीकृष्ण महाराज। इन सभी की शिक्षा-दीक्षा गुरुकुलीय परिवेश में हुई। वैदिक शिक्षा को ऋषि जिस दिन से प्रारम्भ करते थे, उसे हम श्रावणी पर्व के नाम से जानते हैं, चूंकि यह श्रावण मास पूर्णिमा को बनाया जाता है अतः यह श्रावणी कहलाता है। हमें इस पर्व पर जीवन को स्वाध्यायशील बनकर व्यतीत करना चाहिए तथा जीवन में भौतिक उन्नति से ज्यादा आध्यात्मिक उन्नति पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए। उस यज्ञोपवीत के नवीनीकरण का भी महत्व, यज्ञोपवीत हमें पितृ ऋण, देव ऋण एवं ऋषि ऋण से जुड़े कर्तव्यों का स्मरण कराता है। श्रावणी पर्व के ठीक आठवें दिन महायोगी श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के रूप में मनाया जाता है। विश्व को गीता का ज्ञान कराने वाले योगीराज श्रीकृष्ण महाराज सम्पूर्ण विश्व को कर्म करने का महान संदेश सुनाते हैं- 'कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन। मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते सङ्गोऽस्त्वकर्मणि।।' योगीराज श्रीकृष्ण जी के लिए महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने सत्यार्थ प्रकाश में लिखा है-योगीराज श्रीकृष्ण जी का इतिहास महाभारत में अत्युत्तम है।

राष्ट्रीय जागरण के सूत्रधार महर्षि दयानन्द

आर्य कै. अशोक गुलाटी
प्रबंध संपादक

सर्वप्रथम स्वराज्य और स्वदेशी का नारा बुलंद करने वाले महर्षि देव दयानन्द जी ही थे। महर्षि द्वारा धार्मिक एवं समाज सुधार के कई कार्य किये गये, जिसमें सती प्रथा उन्मूलन, बाल विवाह विरोध, विधवा विवाह, मूर्ति पूजा खंडन, पाखंडवाद खंडन, वेदोद्धार, गुरुकुलों की व्यवस्था, अनमेल विवाह विरोध, लोगों में निराकार परमेश्वर की पूजा, प्रेम भावना, स्वदेश प्रेम, राष्ट्रभाषा हिन्दी प्रेम, शराबबंदी, गौ हत्याबंदी, जातपात विरोधी की भावना जगाकर स्वराज्य, देशप्रेम प्राप्ति का मार्ग प्रशस्त किया।

फ्रांस के सुप्रसिद्ध मनीषी रोमा रोलां ने महर्षि दयानन्द को राष्ट्रीय जागरण का सूत्रधार बताया है। अन्य चोटी के लोगों ने भी उनको आधुनिक भारत का निर्माता कहकर उनकी प्रशंसा की है। कांग्रेस के इतिहासकार श्री पट्टाभि सीतारमैया ने महात्मा गांधी को राष्ट्रपिता तथा महर्षि दयानन्द को राष्ट्र पितामह के पदों से संबोधित करके उनके कार्यों का अभिनंदन किया है। अन्यों में...

राम प्रसाद 'बिस्मल' : आर्यसमाज मेरी मां है और महर्षि दयानन्द मेरे गुरु हैं। सत्यार्थ प्रकाश ने मेरे जीवन के इतिहास का नया पृष्ठ खोल दिया।

लाला लाजपत राय : स्वामी दयानन्द मेरे गुरु हैं, उन्होंने हमें स्वतंत्रतापूर्वक विचारना, बोलना और कर्तव्य पालन करना सिखाया। आर्य समाज मेरी माता है।

श्याम जी कृष्ण वर्मा : मैंने जो प्राप्त किया उसमें सबसे बड़ा हाथ उस सर्व-हितैषी, वेदज्ञ, तेजस्वी, युगदृष्टा महर्षि दयानन्द का है। मुझे उनका शिष्य होने का अभिमान है।

सुभाष चंद्र बोस : आधुनिक भारत के आद्यनिर्माता तो दयानन्द ही है।

म. गांधी जी : मैं जैसे-जैसे आगे बढ़ता हूं वैसे-वैसे मुझे महर्षि दयानन्द का मार्ग दिखाई देता है। मुझे आर्यसमाज बहुत प्रिय है।

स्वामी श्रद्धानंद : सत्य को ही अपना ध्येय बनाएं और ऋषि दयानन्द को अपना आदर्श बनाएं।

लोकमान्य तिलक : स्वराज्य और स्वदेशी का सर्वप्रथम मंत्र प्रदान करने वाले जाज्वल्यमान नक्षत्र थे महर्षि दयानन्द।

सरदार पटेल : भारत की स्वाधीनता की नींव रखने वाले वास्तव में स्वामी दयानन्द थे। महर्षि दयानन्द देश के राजनीतिक एकीकरण के लिए विदेशी राज्य का अंत चाहते थे, जिसे उन्होंने अपने अमर ग्रंथ सत्यार्थ प्रकाश में अपनी यह इच्छा स्पष्टतया प्रकट की है। (समु. 8)

साधु टी.एल. वासवानी : ऋषि दयानन्द का जीवन राष्ट्र निर्माण के लिए स्फूर्तिदायक, बलदायक और मानवीय है। दयानन्द उत्कृष्ट देशभक्त थे। अत: मैं राष्ट्रवीर समझकर उनकी वंदना करता हूं।

पीर मुहम्मद यूनुस : ईसाईयत और पश्चिमी सभ्यता के मुख्य हमले से हिन्दुस्तानियों को सावधान करने का सेहरा यदि किसी के सिर बांधने का सौभाग्य प्राप्त हो तो स्वामी दयानन्द की ओर इशारा किया जा सकता है। 19वीं सदी में स्वामी दयानन्द ने भारत के लिए जो अमूल्य काम किया है उससे हिन्दू जाति के साथ-साथ मुसलमानों तथा अन्य धर्मावलम्बियों को भी लाभ पहुंचा है।

योगी अरविन्द : वह दिव्य ज्ञान का सच्चा सैनिक, विश्व के प्रभु की शाखा

महर्षि द्वारा धार्मिक एवं समाज सुधार के कई कार्य किये गये, जिसमें सती प्रथा उन्मूलन, बाल विवाह विरोध, विधवा विवाह, मूर्ति पूजा खंडन, पाखंडवाद, खानपान वेदोद्धार, गुरुकुलों की व्यवस्था, अनमेल विवाह विरोध लोगों में निराकार परमेश्वर की पूजा, प्रेम भावना स्वदेश प्रेम, राष्ट्रभाषा हिन्दी प्रेम, शराब बंदी, गौ हत्याबंदी, जातपात विरोधी की भावना जगाकर स्वराज्य प्राप्ति का मार्ग प्रशस्त किया।

में लाने वाला योद्धा और मनुष्य व संस्थाओं का शिल्पी तथा प्रकृति द्वारा आत्मा के मार्ग में उपस्थित की जाने वाली बाधाओं का विजेता था। और इस प्रकार मेरे समक्ष आध्यात्मिक क्रियात्मकता की एक शक्ति सम्पन्न मूर्ति उपस्थित होती है। इन दो शब्दों का जो कि हमारी भावनाओं के अनुसार एक-दूसरे के सर्वथा भिन्न हैं का मिश्रण ही दयानन्द की उपयुक्त परिभाषा प्रतीत होती है। इनके व्यक्तित्व की व्याखा की जा सकती है। एक मनुष्य जिसकी आत्मा में परमात्मा है, चक्षुओं में दिव्य तेज है और हाथों

(शेष पृष्ठ-20 पर)

भूत-प्रेत आदि की क्या वास्तव में कोई सत्ता है या केवल हमारा भ्रम

गंगाशरण आर्य, साहित्य सुमन

भूत-प्रेत के नाम से बच्चों व बड़ों के मन में एक अज्ञात भय समाया रहता है। अक्सर बाल्यकाल से ही हर किसी ने भूत-प्रेत आदि के किस्से-कहानियां अपने मित्रों से, सगे-संबंधियों से या टीवी इत्यादि के माध्यम से देखी व सुनी होंगी लेकिन ज्यादातर लोग इन्हें जीवन का भयावह सत्य मानकर स्वीकार कर डरते रहते हैं, कोई-कोई ही अपने मन से उनके डर को हटाकर उनकी वास्तविकता को जानने का प्रयास करता है। यह भूत-प्रेत आदि कब और कैसे मनुष्य की जीवन रूपी गाड़ी में प्रवेश कर जाते हैं? पता ही नहीं चलता। इसलिए बस यही जानना है कि क्या वास्तव में मनुष्य जीवन को हिलाकर रख देने वाले भूत-प्रेत आदि की कोई सत्ता है भी या यह केवल हमारे मन में छिपा कोरा भ्रम।

भूत का नाम सुनकर लोग अक्सर कोई डरावनी सी तस्वीर अपने मन में बना लेते हैं वे समझते हैं कि हमारे बीच में रहने वाले लोगों में से कोई जब अकस्मात् मर जाता है तो उसकी सद्गति न होने से वह भूत बन जाता है जबकि केवल हमारी कल्पना मात्र के कारण ही हमारी ऐसी सोच है क्योंकि अगर अकस्मात् मरने पर भूत बन जाते हैं तो हर रोज हमारे आसपास रहने वाले अनेक जीव जैसे मच्छर को ही ले लो उसे तो हम ही मृत्यु के गाल में पहुंचा देते हैं अर्थात वह तो बेचारा घूम रहा था हमने हमें न काट जाए इस डर से उसे मार दिया उसकी भी तो घूमते-घूमते अचानक मृत्यु हो गई यही नहीं कसाई मीट की दुकानों पर रोजाना हमारी लिप्सा की पूर्ति के लिए न जाने कितने ही मुर्गे व बकरे आदि को बिन मौत के ही मार देते हैं।

इसके अलावा भी ऐसे ही न जाने कितने ही जीव जैसे चीटी, जूं, चूहे, सांप, कॉकरोच आदि रोजाना हमारे हाथों अचानक मृत्यु को प्राप्त होते हैं, क्या उनमें आत्मा नहीं होती? क्या वें सारे के सारे भूत बन जाते हैं? अगर वे भूत बनते हैं तो कभी किसी ने मच्छर, मुर्गे या बकरे आदि का भूत क्यों नहीं देखा? कभी कोई किसी कीड़े या जू आदि के भूत से डरा हो ऐसा सुनने में क्यों नहीं आता? आएगा भी क्यों, क्योंकि हमने कभी इनकी मृत्यु पर इनके भूत बनने का विचार ही नहीं किया, किया तो केवल यह कि अच्छा है मेरे हाथों इसकी गति हो गई, मरना तो इसे था ही, ये योनि छुटी इसकी अब अगली योनि में इसे जल्दी ही जन्म मिलेगा यदि ऐसा ही विचार हम किसी भी मनुष्य की अचानक मृत्यु होने पर करने लगेंगे तो हमारी कल्पना का भूत जल्दी ही गायब हो जाएगा।

थोड़ा और विचार करो कि यदि वास्तव में अचानक मरने पर मृतक भूत बन जाता है फिर तो देश-विदेश में होने वाले परमाणु परीक्षणों के कारण और जो सुनामी एवं भूकंप और बाढ़ तथा विभिन्न रूपों में आने वाली प्राकृतिक आपदाएं आने पर जो लोग मरे हैं ये तो सारे के सारे भूत बन जाते, जिनकी संख्या लाखों नहीं अरबों में है अगर ऐसा हुआ है तो अखबारों में और मीडिया पर रोजाना भूतों के ही चर्चे क्यों नहीं आते? और यदि आप कहो कि भूत केवल भारत के ही मरने वाले बनते हैं तो भी कुरुक्षेत्र में हुए महाभारत के युद्ध में तो करोड़ो की संख्या में सेना मरी थी यदि वास्तव में भूतों का कोई अस्तित्व होता तो उनके भूतों के डर का साया आज तक कुरुक्षेत्र में दिखाई देता और दिल्ली ही नहीं पूरे देश में सुनाई देता।

इसी प्रकार पानीपत की लड़ाई, प्लासी की लड़ाई, बक्सर का युद्ध और इतिहास उठाकर देख लो देश के बंटवारे के समय होने वाली मारकाट के दौरान, जलियावाला बाग हत्याकांड में लोग अपनी मौत नहीं बल्कि बिना ही मौत मारे गए थे, और भोपाल गैस कांड में भी कितनी बड़ी संख्या में लोगों ने अपने प्राण गवाएं थे क्या वे सब अचानक नहीं मरे थे? क्या उनके भूतों की चर्चा कभी सुनी है किसी ने? नहीं, क्योंकि ये भूतादि काल्पनिक हैं और सिर्फ हमें डराकर धन लूटने वालों के द्वारा फैलाये गए जाल का एक हिस्सा है, हमें व हमारी भावी पीढ़ियों को लूटते रहने के लिए वैचारिक प्रदूषण के तहत बनाए गए षड्यंत्र की

एक कड़ी है और कुछ नहीं। इस भूत-प्रेतादि के भय के पीछे सयाने, सेवडे आदि का हाथ होता है, वे छल-कपटी रात्रि के समय भयंकर डरावने मुखौटे आदि लगाकर एकांत स्थान के आसपास विचरण करते रहते हैं या वृक्षों पर छुपकर बैठ जाते हैं व तरह-तरह की डरावनी आवाजें निकालते हैं और राहगीरों पर पत्थर या जलते कोयले आदि बरसाते हैं ताकि लोगों को लूट सकें और मजबूरीवश उस रास्ते से जाने वाले व्यक्ति इन्हें व इनकी हरकतों को देखकर भय के कारण मुर्छित हो जाते हैं, ये फिर उनका धन लूट लेते हैं और जो मुर्छित नहीं होते वे भाग खड़े होते हैं एवं अपने आसपास के लोगों में इन्हें भूत-प्रेतादि मानकर इनका विचित्र ढंग से बखान करते हैं जिससे इनका दुष्प्रचार और भी अधिक हो जाता है तथा उनके सम्पर्क में आने वाले अबोध बालक जीवन पर्यंत इन्हीं पूर्वाग्रहों से ग्रसित रहते हैं।

अत: हमारे विचारों में दृढ़ता होनी चाहिए क्योंकि भूत-प्रेतादि पर विश्वास या उनका भय विचारों की दुर्बलता और मस्तिष्क की कमजोरी एवं अविद्या के कारण ही होता है। इसे बौद्धिक रोग भी कह सकते हैं क्योंकि सत्य जाने बिना ही लोग अपनी बुद्धि पर ताला तगाकर उनकी सत्ता मानने लगते हैं, बस विचार शून्य होकर डर के आगे घुटने टेक देते हैं। लोग अक्सर दोहरी मानसिकता लेकर जीते हैं एक तरफ तो वह करते हैं कि आत्मा अजर है, अमर है अर्थात् आत्मा का न तो जन्म होता है और नही मृत्यु होती है और दूसरी तरफ यह मानते हैं कि जिन आत्माओं की गति नहीं होती वे भूत बन जाती हैं और अन्य मनुष्य मात्र को तंग करती है। यहां पहला प्रश्न तो यह है कि सद्गति न होने से जिस आत्मा ने शरीर धारण ही नहीं किया अर्थात् जिसके पास शरीर है ही नहीं वह बिना शरीर के किसी को भी तंग कैसे कर सकती है?

दूसरा प्रश्न यह है कि भूत बनकर आत्मा केवल मनुष्यों को ही क्यों तंग करती है? जब आत्मा का जन्म ही नहीं होता और वह मरती भी नहीं है तो भूत कौन बनता है? शरीर का ही जन्म होता है और मृत्यु भी शरीर की ही होती है तो फिर क्या शरीर ही भूत होता है? असल बात यह है कि जो उत्पन्न हो चुका होता है उसते भूत ही कहते हैं क्योंकि भूत शब्द 'भू' धातु को क्त प्रत्यय लगाकर बनता है और 'भू' का अर्थ ही होता है होना अर्थात् जो हो चुका है इसलिए ही पृथ्वी, जल, वायु, तेज व आकाश आदि को भी पंचमहाभूत कहा जाता है और इनसे ही हमारा यह भौतिक शरीर बना है जो मृत्यु के पश्चात इन्हीं में विलीन हो जाता है। हां केवल इसी अर्थ में ही मृत शरीर को दाह संस्कार करने के पश्चात् भूत कहा जा सकता है कि कभी वह भी उत्पन्न हुआ था।

आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द जी ने भी सत्यार्थप्रकाश में इस बात को स्पष्ट करते हुए लिखा है कि जिस शरीर से जीव निकल जाए उसे प्रेत कहते हैं अर्थात् जीव निकलना शरीर यानि कि मृतक को ही प्रेत कहा जाता है और जब उस शरीर का दाह हो चुका हो तब उसका नाम भूत होता है अर्थात् वह अमुकनामा पुरुष था। जितने उतपन्न हो, वर्तमान में आ के न रहें वे भूतस्थ होने से उनका नाम भूत है। ऐसा ब्रह्मा से लेकर आज पर्यंत के विद्वानों का सिद्धांत है। हमें भूत-प्रेत आदि से डर क्यों लगता है? इसका एक ही कारण है हमारा अवचेतन मन। जिसे शुभ संकल्पों वाला होना चाहिए था परन्तु 'वैदिक' विद्या के अभाव में वह अविद्या के संस्कारों को ग्रहण करता चला जाता है। प्राचीन काल में लोग वैदिक विद्या के अनुरूप आचरण करते थे इसलिए उनकी विचार शक्ति अत्यन्त प्रबल होती थी यही कारण है कि रामायण और महाभारत काल में कभी कहीं भी किसी भूत-प्रेत आदि का किस्सा सुनने में नहीं आया।

राम, लक्ष्मण और सीता ने अपने जीवन के 14 वर्ष निर्जन भयानक वन में रहकर बिताए, पांडव पुत्रों युद्धिष्ठिर, भीम, अर्जुन आदि ने भी अपनी मां कुंती के साथ लम्बे अरसे तक वन में जीवन बिताया। क्या उनके समय में भूतों की कोई सत्ता नहीं थी? यही नहीं भारत की महान गौरव-गरिमा का व्याख्यान करने वाले हमारे ऋषि-महर्षियों ने भी अपना अधिकांश जीवन घोर-घने जंगलों में बिताया है उन्होंने भी कहीं वैदिक साहित्य में किसी भूत का जिक्र नहीं किया। कारण भूत होते ही नहीं हैं।

कितनी रातें महर्षि दयानन्द जी ने भी अपने जीवन को वनों में अकेले रहकर बितायी होंगी लेकिन उनके द्वारा लिखित साहित्य में भी उन्होंने कहीं भूत कोई योनि है ऐसा नहीं बतलाया। स्वामी श्रद्धानन्द ने तो गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना भी बीहड़ बन में गंगा तट पर की थी। क्या तब भूत नहीं होते थे? नहीं ऐसा नहीं है आज भी वही संसार है, आज भी लोग उसी प्रकार जन्मते और मरते हैं, बदले हैं तो केवल हमारे विचार जिनके कारण आज हम भूत-प्रेत, डाकिनी, शाकिनी आदि के भय से ग्रसित हो गए हैं।

प्रेरक जीवन के धनी

योगीराज श्रीकृष्ण

(पिछले अंक का शेष)

डॉ. महेश विद्यालंकार

जातीय कलह, संघर्ष तथा बढ़ते मदिरापान के प्रचलन से अंत में दु:खी रहने लगे। जन्म से लेकर मृत्युपर्यंत श्रीकृष्ण को कभी शांति, चैन आराम व सुख से रहने और बैठने का अवसर नहीं मिला। ऐसा अद्‌भुत विलक्षण, सर्वगुण सम्पन्न, मानवता का पुजारी, धर्मशास्त्र, राजनीति, कूटनीति आदि के ज्ञाता युगपुरुष संसार के इतिहास में नहीं मिलेगा। अपने देवी, देवताओं तथा महापुरुषों के चरित्र व जीवन दर्शन को विकृत एवं कलंकित करने वाली संसार में कोई अभागी जाति है तो वह हिन्दू जाति है। जिसने अपने देवपुरुषों का सत्य स्वरूप जाना, माना और समझा नहीं। जैसा श्रीकृष्ण का भौंडा, विकृत भोगी और विकारी चरित्र लोककथाओं, किस्से-कहानियों, सीरियलों, पिक्चरों, फिल्मों आदि में दिखाया व बताया जा रहा है वैसा सच्चे अर्थ में उनका जीवन नहीं था। पुराणों व लोकसाहित्य में उन्हें चोर-जार शिरोमणि, लम्पट, माखन चोर, भोगेश्वर आदि न जाने क्या-क्या लांछन लगाए गए हैं।

श्रीकृष्ण के नाम पर अश्लीलता, श्रृंगार-भोग वासना, पाखंड, अंध-विश्वास आदि मीडिया के माध्यम से परोसा और फैलाया जा रहा है। उनके चरित्र के दैवीय गुणों की गरिमा पर कीचड़ उछाला जा रहा है। यह सत्य है कि श्रीकृष्ण का जीवन गुण, कर्म, स्वभाव, आचरण आदि ऐसा नहीं था जैसा कि आज दुनिया देख व मान रही है। यह हमारा दुर्भाग्य, अज्ञानता, अशिक्षा और मानसिक विकृति रही कि योगेश्वर श्रीकृष्ण जैसे राष्ट्रनायक इतिहासपुरुष योगीराज विशेषणधारी और असाधारण दिव्यात्मा के जीवन को हम कितना नीचे गिरा रहे हैं? यह हम सभी के लिए चिंतनीय और निन्दनीय होना चाहिए। क्या उनके योगदान का यही प्रतिदान है?

आर्यसमाज का जन्म ही सत्य के शोधन और उसके प्रचार-प्रसार के लिए हुआ है। इसका नारा रहा है जागते रहो, जागते रहो? आर्य समाज ने अन्य में योगदान के साथ-साथ महापुरुषों के उज्जवल धवल निर्मल जीवन चरित्रों को संसार के सामने रखा।

उनके चरित्रों के ऊपर जो गंदगी, लांछन, मनगढ़ंत, बे-सिर-पैर की बातें और विकृतियां आईं, उनकी प्रामाणिकता एवं तर्क-प्रमाण से सफाई की। उनके देवत्व एवं महापुरुषत्व की वकालत व रक्षा की। जिस सत्य स्वरूप में आर्यसमाज अपने महापुरुषों को मानता, पहिचानता और बताता है, उस रूप में सार नहीं जानता है। अधिकांश लोगों में यह भ्रांति, अज्ञान व नासमझी है कि समाज किसी देवी-देवता, महापुरुष आदि को नहीं मानता है? यह भूल व जितनी सच्चाई, गहराई और वास्तविक रूप में आर्य समाज अपनी सभ्य-संस्कृति धर्मग्रंथों तथा महापुरुषों को जानता-मानता एवं मान-प्रतिष्ठा देता है कोई दूसरा नहीं दे सकता। आर्य समाज अपने महापुरुषों के चित्र का सम्मान और चरित्र के अनुकरण की प्रेरणा देता है। महापुरुष और बड़े बुजुर्ग हमारे प्रकाश स्तम्भ होते हैं जिनसे हमें जीवन के लिए रोशनी मिलती है।

आर्यसमाज योगेश्वर श्रीकृष्ण जी को गुण-कर्म स्वभाव, जीवनदर्शन आदि से युक्त महापुरुष के रूप में सम्मानित एवं प्रतिष्ठित करता है। उन्हें अवतारी ईश्वर के रूप में नहीं मानता है। ईश्वर एक है। वह जन्म-मृत्यु तथा अवतार के बंधन से परे है। वह कभी अवतार नहीं लेता है। ईश्वर और भगवान में मौलिक अंतर है- भगवान

शब्द पद्वी व सम्मान है। मनुष्य गुण, कर्म, स्वभाव, आचरण से भगवान बन सकता है, मगर ईश्वर नहीं हो सकता है। ईश्वर चित्र-विचित्र जड़ चेतन सृष्टि को बनाता-चलाता, समस्त जीवों का पालन करता, संहार की शक्ति रखता और जीवों के कर्मानुसार फल देने की सामर्थ्य रखता है। ईश्वर सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान, अजन्मा, नित्य आदि गुणों से युक्त है।

वह सृष्टि का आदि और अंत है। परमात्मा कभी मनुष्य देह धारण नहीं करता और उसे देह धारण करने की आवश्यकता भी नहीं है। ऐश्वर्य, धर्म, यश, श्री, ज्ञान व वैराग्य इन छह को भाग कहा गया है-जिनके पास ये छह बातें हैं उन्हें भगवान कहा गया है।

मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्रीराम और योगीराज भगवान श्रीकृष्ण दोनों ही महापुरुषों के पास ये छह बातें थीं इसलिए उन्हें भगवान की पद्वी से सम्मानित एवं प्रतिष्ठित किया गया आम प्रचलन में सदैव इन दोनों देवात्माओं को भगवान संबोधन किया जाता है। कहीं इन दोनों महापुरुषों को परमात्मा ईश्वर, प्रभु आदि शब्दों में संबोधन नहीं मिलता है। ये दोनों असाधारण देवपुरुष हमारे सामने आदर्श रूप में रोल मॉडल हैं। इनके जीवन गुण- कर्म स्वभाव आचरण योगदान आदि से प्रेरणा, शिक्षा व संदेश मिलता है मनुष्य चाहे तो वह भी गुण कर्म स्वभाव, आचरण तप त्याग सेवा आदि से भगवान बन सकता है। यही तो महापुरुषों के जन्मदिन, जयंतियां व पर्व मनाने की सार्थकता, उपयोगिता व व्यावहारिकता है। इनका चित्र-चरित्र तथा स्मरण भूले-भटके मानव को दिशा और रोशनी देते हैं। योगेश्वर श्रीकृष्ण का प्रामाणिक व वास्तविक जीवन चरित्र हमें महाभारत और गीता में मिलता है।

आर्य समाज जिस कृष्ण को मानता है, वे आप्त पुरुष हैं

आर्य समाज जिस योगेश्वर श्रीकृष्ण को मानता है, वे आप्त पुरुष है। इस विषय में महर्षि दयानंद ने जो विचार योगेश्वर भगवान श्रीकृष्ण के लिए प्रस्तुत किये है वह देखने योग्य है। सत्यार्थ प्रकाश के एकादश समुल्लास में वे लिखते है- 'देखो! योगेश्वर श्रीकृष्ण जी का इतिहास महाभारत में अत्युत्तम है। उनका गुण, कर्म, स्वभाव और चरित्र आप्त पुरुषों के सदृश है। जिसमें कोई अधर्म का आचरण श्रीकृष्ण जी ने जन्म से मरणपर्ययन्त बुरा काम कुछ भी किया हो ऐसा नहीं लिखा।' आप्त पुरुष महर्षि दयानन्द सरस्वती उन्हे मानते हैं जो यथार्थवक्ता हो और सब के सुख के लिए प्रयत्न करता हो। एक दूसरा वक्तव्य स्वाधीनता सेनानी लाला लाजपतराय ने अपने ग्रन्थ कृष्ण चरित्र में दिया है- 'संसार के महापुरुषों पर दोषारोपण करने वाले उनके विरोधी ही रहे है किन्तु योगेश्वर श्रीकृष्ण ही ऐसे अकेले महापुरुष हैं जिनके चरित्र को कलंकित करने वाले उनके भक्त ही हैं।

योगेश्वर भगवान श्रीकृष्ण का जन्म ऐसे समय में हुआ था जब कंस के अत्याचारों से सभी पीड़ित थे और उससे छुटकारा पाने के उपाय सोचते रहते थे। योगेश्वर भगवान श्रीकृष्ण ने कंस का वध करके उसके पिता को ही राज्य दे दिया। कौरव-पांडवों के युद्ध में भी उन्होंने अपनी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया और युधिष्ठिर के सार्वभौम राज्य की स्थापना के लिए सफल प्रयत्न किया। महाभारत के अनुसार श्रीकृष्ण योगिराज थे, उनकी एक पत्नी रुक्मिणी थी और एक ही पुत्र प्रध्युम्न था। उनके जीवन में किसी अन्य स्त्री का प्रेमिका रूप से प्रवेश नहीं था। इसी रूप में आर्य समाज उनके पावन चरित्र का गुणगान करता है। संसार की कुटिल गति देखिये की ऐसे पावन चरित्र को कलंकित करने का कार्य कवियों और गल्प रचयिताओ के द्वारा सारी मर्यादाओं को पार करके किया गया। उनके चरित्र को इतना कलंकित कर दिया की अन्य देशीय लोग ऐसे महापुरुषों पर उंगली उठाते है। भारतीय संस्कृति तो अपमानित होती ही है, इतिहास पर भी आंच आती है।

संकलन : आर्ष गुरुकुल, नोएडा

देश की आजादी में महर्षि दयानन्द और आर्यसमाज का योगदान

मनमोहन कुमार आर्य
देहरादून, उत्तराखंड

माना जाता है कि देश 15 अगस्त, 1947 को अंग्रेजों की दासता से मुक्त हुआ था। तथ्य यह है कि सृष्टि के आरम्भ से पूरे विश्व पर आर्यों का चक्रवर्ती राज्य रहा। आर्यों व उनके पूर्वजों ने ही समस्त विश्व को बसाया है। सभी देशों के आदि पूर्वज आर्यावर्तीय आर्यों की ही सन्तानें व वंशज थे। सृष्टि का आरम्भ 1.96 अरब वर्ष पूर्व तिब्बत में अमैथुनी सृष्टि से हुआ था। ईश्वर ने अमैथुनी सृष्टि में उत्पन्न चार ऋषियों अग्नि, वायु, आदित्य तथा अंगिरा को चार वेदों का ज्ञान दिया था। सृष्टि में अमैथुनी सृष्टि में जो स्त्री व पुरुष उत्पन्न हुए वह सभी ईश्वर के पुत्र होने, सभी एक ही वर्ण व जाति के होने तथा किसी का कोई गोत्र आदि न होने से वेदों के अनुसार गुण, कर्म व स्वभाव से सब आर्य कहलाये।

इतिहास की लम्बी यात्रा में अनेक उत्थान पतन हुए और सामाजिक ढांचा मुख्यत: विगत पांच छ: हजार वर्षों में काफी तेजी से विकृतियों को प्राप्त हुआ। संसार में आज दो सौ से अधिक जितने भी देश हैं उनका इतिहास महाभारत युद्ध के बाद व विगत पांच हजार वर्षों की अवधि तक सीमित है। इस अवधि में अविद्या के कारण देश देशांतर में वेदेतर मतों का आविर्भाव होता रहा। ऋषि दयानन्द ने मत-मतान्तरों की समीक्षा की तो पाया कि मत मतान्तरों में वेदों से पहुंची हुई कुछ सत्य मान्यतायें हैं और कुछ मान्यतायें उन मतों के आविर्भाव काल में समाज में प्रचलित अविद्या पर आधारित उनके आचार्यों के विचार हैं। सृष्टि के आरम्भ से महाभारत काल तक 1.96 अरब वर्षों तक भारत के कभी गुलाम व दास बनने का कोई संकेत रामायण एवं महाभारत आदि इतिहास ग्रन्थों में नहीं मिलता।

वस्तुत: महाभारत काल तक वेदानुयायी आर्यों का ही पूरे विश्व पर सार्वभौम चक्रवर्ती राज्य था। इस विषय में ऋषि दयानन्द ने अपने अमर ग्रंथ सत्यार्थ प्रकाश के ग्यारहवें समुल्लास में लिखा है 'सृष्टि से ले के पांच सहस्त्र वर्षों से पूर्व समय पर्यंत आर्यों का सार्वभौम चक्रवर्ती अर्थात् भूगोल में सर्वोपरि एकमात्र राज्य था। अन्य देशों में मांडलिक अर्थात छोटे-छोटे राजा रहते थे क्योंकि कौरव पांडव पर्यंत यहां के राज्य और राजशासन में सब भूगोल के सब राजा और प्रजा चले थे क्योंकि यह मनुस्मृति, जो सृष्टि की आदि में हुई है, उसका प्रमाण (मनुस्मृति का श्लोक यथा एतद्देशप्रसूतस्य सकाशाद् अग्रजन्मन:। स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवा:) है। (इस श्लोक का अर्थ है कि) इसी आर्यावर्त देश में उत्पन्न हुए ब्राह्मण अर्थात् विद्वानों से भूगोल के मनुष्य, ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र, दस्यु, लेच्छ आदि सब अपने-अपने योग्य विद्या व चरित्रों की शिक्षा लें और विद्याभ्यास करें। और महाराजा युधिष्ठिर जी के राजसूय यज्ञ

इतिहास की लम्बी यात्रा में अनेक उत्थान पतन हुए और सामाजिक ढांचा मुख्यत: विगत पांच छः हजार वर्षों में काफी तेजी से विकृतियों को प्राप्त हुआ। संसार में आज दो सौ से अधिक जितने भी देश हैं उनका इतिहास महाभारत युद्ध के बाद व विगत पांच हजार वर्षों की अवधि तक सीमित है। इस अवधि में अविद्या के कारण देश देशांतर में वेदेतर मतों का आविर्भाव होता रहा। ऋषि दयानन्द ने मत-मतान्तरों की समीक्षा की तो पाया कि मत मतान्तरों में वेदों से पहुंची हुई कुछ सत्य मान्यतायें हैं और कुछ मान्यतायें उन मतों के आविर्भाव काल में समाज में प्रचलित अविद्या पर आधारित उनके आचार्यों के विचार हैं। सृष्टि के आरम्भ से महाभारत काल तक 1.96 अरब वर्षों तक भारत के कभी गुलाम व दास बनने का कोई संकेत रामायण एवं महाभारत आदि इतिहास ग्रन्थों में नहीं मिलता।
वस्तुतः महाभारत काल तक वेदानुयायी आर्यों का ही पूरे विश्व पर सार्वभौम चक्रवर्ती राज्य था। इस विषय में ऋषि दयानन्द ने अपने अमर ग्रंथ सत्यार्थ प्रकाश के ग्यारहवें समुल्लास में लिखा है 'सृष्टि से ले के पांच सहस्त्र वर्षों से पूर्व समय पर्यंत आर्यों का सार्वभौम चक्रवर्ती अर्थात् भूगोल में सर्वोपरि एकमात्र राज्य था।

और महाभारत युद्धपर्यन्त यहां के राज्याधीन सब राज्य थे।'

देश का पतन महाभारत युद्ध के बाद वेदाध्ययन में शिथिलता के कारण हुआ। वेदाध्ययन में प्रमाद के कारण ही देश में ऋषि परम्परा बंद हो गई और सर्वत्र अविद्या व अविद्यायुक्त मतों का प्रचार प्रसार हुआ। वैदिक मान्यताओं के विरुद्ध एक वाममार्ग पन्थ भी स्थापित हुआ था जिसका व इससे मिलते जुलते सभी अविद्यायुक्त मतों का वर्णन ऋषि दयानन्द ने सत्यार्थप्रकाश में किया है। देश छोटे-छोटे राज्यों व रियासतों में बंटता गया। पहले देश में मुसलमान आये। उन्होंने देश में प्रचलित अंधविश्वासों मूर्तिपूजा, फलित ज्योतिष, जातिवाद, छुआछूत, भेदभाव आदि का सहारा लिया और देश को लूटा। यह प्रवृत्ति जारी रही और बाद में विदेशी मुस्लिम शासकों ने देश के कुछ भागों को पराधीन भी किया। देश में जघन्य अन्याय व अत्याचार किये गये। छल, बल व लोभ से आर्य हिन्दुओं का धर्मांतरण किया गया। आर्य व हिन्दुओं का संगठन छिन्न-भिन्न हो गया तथापि देश के अनेक भागों में आर्य हिन्दू राजा शक्तिशाली थे। महाराष्ट्र, राजस्थान व दक्षिण के अनेक राजा पराक्रमी रहे जिन पर विधर्मी विजय प्राप्त नहीं कर सके अपितु उनकी जो भी कोशिशें होती थी, वह विफल की जाती रहीं। वीर शिवाजी, महाराणा प्रताप आदि देश व धर्म रक्षक महापुरुषों का इतिहास सभी भारतीयों को पढ़ना चाहिये। इससे उन्हें अपने इन पूर्वजों की गौरव गाथाओं को जानने का अवसर मिलेगा और उन्हें जो दूषित इतिहास पढ़ाया गया उसके प्रभाव से वह बच सकेंगे।

भारत पर आठवीं शताब्दी में मुस्लिमों के आक्रमण आरम्भ हुए थे। हमारे हिन्दू राजा धर्म पारायण थे और उसी के अनुसार व्यवहार करते थे जबकि विधर्मी विदेशी आक्रमणकारी किसी नीति व नियम को नहीं मानते थे। अन्याय, अत्याचार तथा जघन्य हिंसा व लूटपाट करना उनका स्वभाव था। हमारी आपस की फूट एवं यथायोग्य व्यवहार की नीति न होने के कारण हमारे कुछ राजाओं को पराधीनता का दंश झेलना पड़ा। कालांतर में यह प्रक्रिया जारी रही और अनेक छोटे छोटे राज्यों पर विदेशी लुटेरे आक्रांताओं का कब्जा हो गया।

मुस्लिमों के बाद ईस्ट इंडिया कंपनी ने भारत में व्यापार आरम्भ किया। उन्होंने देश की कमजोरियों का अध्ययन किया और अपनी राजनीतिक शक्ति के प्रसार व विस्तार की योजना को बीज रूप में लेकर काम करने लगे। उसका विस्तार ही देश पर अंग्रेज राज्य की स्थापना के रूप में सामने आया। शनैः-शनैः देश के अधिकांश भागों पर अंग्रेजों का राज्य हो गया। इनके काल में भी सुनियोजित ढंग से ईसाई मत का प्रचार-प्रसार किया गया और छल, बल व लोभ का सहारा लेकर लोगों को ईसाई मत में परिवर्तित किया गया। देश की जनता पर अंग्रेजों के अत्याचार बढ़ रहे थे। देश के संसाधनों का शोषण व दोहन किया जा रहा रहा था। संस्कृति को भी समाप्त किया गया और लोगों को स्थाई रूप से गुलाम बनाने व उनसे प्रशासनिक कार्य कराने के लिये अंग्रेजी का प्रचलन किया गया। अंग्रेजी पढ़कर नौकरी व कुछ रुतबा प्राप्त होता था, अतः माता-पिता अपनी संतानों को अंग्रेजी शिक्षा दिलाने लगे। यह शिक्षा हमारे देश के लोगों का अपने प्राचीन धर्म एवं संस्कृति के प्रति हीनता का भाव उत्पन्न करने के साथ विदेशी ईसाई परम्पराओं को अच्छा मानने लगी जिससे सनातन वैदिक धर्म का प्रभाव न्यून होता गया। आर्य हिन्दुओं की संख्या भी निरंतर घटती रही। ऐसे समय में देश के विज्ञ जन असंगठित रूप से इसका विरोध करते थे जिनको दबा दिया जाता था। अन्याय व अत्याचारों का परिणाम ही 1857 का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम था जो किन्हीं कारणों से असफल हो गया। ➡➡

अनमोल वचन

- जो मनुष्य इस संसार में आकर तप अर्थात प्रभु भक्ति नहीं करता वह मनुष्य मानों मरकतमणिनिर्मित बरतन में लशुन को चंदन के ईंधन से पका रहा है, वह मानो सोने का हल चलाकर आक के बूटे को बोने के लिए भूमि को साफ कर रहा है और कपूर के टुकड़ों को काटकर कोदों के चारों और बाड़ लगा रहा है अर्थात जैसे वह मूर्ख है ऐसे ही भक्ति न करने वाला मूर्ख है।
- प्रभु भक्ति : सुख में, दुख में, सभाओं में, वनों में, घर में, परदेश में, पर्वतों पर, जंगलों में, दिन में, रात में, सायंकाल में, प्रभात में, हे सुमतियुक्त पाप रहित, धीर पुरुषों! उस परमपुरुष सर्वरक्षक ओ३म् की सदा उपासना करो।

आत्मा की आवाज

आचार्य ओमकार शास्त्री
उपाचार्य, आर्ष गुरुकुल, नोएडा

आत्मा संसार का महत्वपूर्ण आधार है। क्योंकि हमारे तीन ही स्तम्भ हैं- ईश्वर, आत्मा, प्रकृति। आत्मा का अपना विशेष स्थान है क्योंकि आत्मा के बिना मनुष्य आदि का शरीर मृत हो जाता है। वास्तव में हम विचार करें तो आभास होता है कि जो आत्मा कहती है, वही सत्य होता है, लेकिन यह आत्मा की आवाज को सुनने की क्षमता प्रत्येक मनुष्य के पास नहीं होती है। आत्मा की आवाज को समझने के लिए मनुष्य का अध्यात्मिक होना आवश्यक है और वही व्यक्ति आध्यात्मिक हो सकता है जो ईश्वर का भक्त है। ईश्वर भक्ति के लिए भी वेद-ज्ञान का होना भी आवश्यक है। क्योंकि वेद के बिना सही मार्ग का पता नहीं चल पाता है। आत्मा के संबंध में महाभारत कहता है- 'आत्मना प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत्।' महाभारत-5/15/17, अर्थात् अपनी आत्मा को जो दुखदायी लगे, वैसा आचरण दूसरों के साथ न करें।

अपमान, तिरस्कार, मारपीट, गाली-गलौज आदि अपने लिए नहीं चाहते तो दूसरे के साथ भी ऐसा न करें। यदि आपको आपकी वस्तु चोरी होने पर कष्ट होता है तो दूसरे व्यक्ति को भी होता होगा। इसलिए धर्म के मार्ग पर चलें और सभी का भला करें और दूसरों को भी अच्छा करने की प्रेरणा दें। जो मनुष्य स्वार्थ के वशीभूत होकर मौज आदि के लिए हजारों मनुष्यों, जीवों को कष्ट पहुंचाने में हिचकिचाते नहीं और नहीं शरमाते हैं। उन्हें ऐसी हिंसा में आनंद आता है। वास्तव में वे कभी सुखी नहीं हो सकते।

इसलिए आत्मा की आवाज को सुनें और उसके वास्तविक स्वरूप को समझें क्योंकि आत्मा अजर-अमर है। प्रत्येक आत्मा को ईश्वर भक्ति, परोपकार और धर्मपरायणता से आनंद की प्राप्ति होती है। जैसे-हम किसी अंधे व्यक्ति को हाथ पकड़कर सड़क पार करा दें या उसकी और कोई सहायता कर दें तो हमारी आत्मा को शांति और आनंद का अनुभव होता है। यदि हम किसी के साथ दुर्व्यवहार कर दें तो मन दुखी रहेगा और आत्मा को भी कष्ट होगा। चाहे वह दुष्ट का आत्मा हो या सज्जन का हो। सभी को इसका आभास होता है। भले ही हम उसको प्रकट रूप से न कह सके।

जीवात्मा मनुष्य शरीर में हो या अन्य प्राणियों के शरीर में हो, यह सर्वत्र एकदेशी व अल्पज्ञ है। एकदेशी का अर्थ परिमित स्थान में रहने वाला सूक्ष्म पदार्थ है। आत्मा की लम्बाई व चौड़ाई को न तो मिलीमीटर व उसके अंशों में व्यक्त किया जा सकता। इसकी लम्बाई, चौड़ाई व गोलाई को गणित की रीति से इसलिये व्यक्त नहीं किया जा सकता कि हम जितनी भी कल्पना करेंगे यह उससे भी सूक्ष्म है। हां, ईश्वर की सूक्ष्मता की दृष्टि से ईश्वर जीवात्मा से अधिक सूक्ष्म है और आत्मा के भीतर व्यापक रहता है।

आत्मा असीम है अर्थात् परिमित है। आत्मा का गुण कहें या स्वभाव यह जन्म व मरण धर्मा है और कर्मानुसार उनके सुख-दु:ख रूपी फलों का भोगता है। आत्मा का अनेक प्राणियों योनियों में कर्मानुसार जन्म होता है। वहां यह पलता व बढ़ता है। इसमें शैशव, बाल, किशोर, युवा, प्रौढ़ व वृद्धावस्थाएं आती हैं और फिर इसकी मृत्यु हो जाती है। मृत्यु के बाद इसका पुन: उसके कर्मों के अनुसार जन्म होता है। हमारा वर्तमान जन्म से पूर्व भी जन्म था, उससे पूर्व मृत्यु और उससे भी पूर्वजन्म था। इस क्रम व श्रृंखला का न तो आरम्भ है और न अंत। यह सदा से चला आ रहा है और सदैव इसी प्रकार चलता रहेगा। आत्मा अनादि, नित्य, अमर व अविनाशी पदार्थ है। यह न कभी उत्पन्न होता है और न नष्ट होता है।

हमारी आत्मा एक अत्यंत सूक्ष्म चेतन पदार्थ हैं। यही हम है और हमारा शरीर हमारा साधन है जिससे हमें अपने जीवन के उद्देश्य को प्राप्त करना है। उद्देश्य है धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष। मोक्ष अंतिम लक्ष्य है। यह सभी लक्ष्य मनुष्य शरीर रूपी साधन से प्राप्त होते हैं। इन साधनों का उल्लेख वेद और दर्शन आदि ग्रन्थों सहित ऋषि दयानन्द कृत ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश आदि में है। मत-मतान्तरों के ग्रन्थ अविद्या से युक्त होने के कारण न उनसे जीवन के लक्ष्य को जाना जा सकता है और न उसकी प्राप्ति के साधनों को ही। अत: आत्मा को जानकर हमें अपने उद्देश्य व लक्ष्य को जानने व उसे प्राप्त करने के लिए प्रयत्न करना है। लक्ष्य की प्राप्ति के लिए हमें मोक्ष के साधनों को करना होगा।

कारुण्यं भवभूतिरेव तनुते

डॉ. शिव प्रसाद शर्मा

संस्कृतवाङ्मये प्रदर्शितवाग्देवताविभूतिना महाकविभवभूतिना नाटकत्रयं निर्माय भारतीसेवषु कविषु स्वीयं विशिष्टं स्थानं प्राप्तमिति सर्वे जानन्ति एव। नाटकानां प्रणयने कालिदासादनन्तरं न केनापि कविना ईदृशी वैदूष्यख्यातिरर्जिता। मालतीमाधवम्, महावीरचरितम्, उत्तरराम-चरितञ्चेति त्रीणि नाटकानि ब्राह्मणों वद्नात् भवभूतिसदनात् विनिर्मितानीति विश्रुतम्। अस्य महाकवेः वैशिष्ट्यं नाट्यक्षेत्रे प्रधानरसत्वेन करुणरसस्य प्रतिष्ठानमेव विद्यते। इतः पूर्वम् अमुना एक एव भवेदङ्गी श्रृंगारो वीर एव वा इति प्राचीनानामालंकारिकाणां मतं स्वीकृत्य मालतीमाधवे श्रृंगारो महावीर चरिते च वीरो रसः प्राधान्येन निरूपितः, किन्तु उत्तररामचरिते 'एको रसः करुण एव निमित्त भेदादिति' स्वप्रतिज्ञां संस्थाप्य करुणो रस एव रसराज इति सिद्धांतः प्रतिष्ठापितोऽभवत्।

यथा प्राचीनानां कवीनां देशकालादिपरिचयः प्रायः दुर्लभो, तथा भवभूतिविषये नास्ति। अनेन स्वनाटकेषु संक्षेपेण 'ग्रामं गच्छन् तृणं स्पृशति' न्यायात् इति स्वपरिचयः प्रदत्त एव-तद्यथा महावीर चरिते, मालतीमाधवे च 'अस्ति दक्षिणापथे पद्मपुरं नाम नगरम्। तत्र केचित् तैत्तिरीयिणः काश्यपाश्चरणगुरवः पंक्तिपावनाः पंचाग्नयो धृतवताम् उदुम्बराब्रह्मवादिनः प्रतिवसन्ति, तदामुष्यामाणस्य तत्रभवतो वाजपैयाजिनो महाकवेः पंचमः सुगृहोतनाम्नो भट्टगोपालस्य पौत्रः पवित्रकीर्तेनीलकण्ठस्यात्म सम्भवः श्रीकण्ठपदलाञ्छनो भवभूतिर्नाम जतुकर्णी पुत्रः।' इतोऽपि संक्षेपेण उत्तररामचरिते सुत्रधारः कथयति- 'एवमत्रभवन्तजो विदाङ्कुर्वन्तु, अस्ति खलु तत्रभवान् काश्यपः श्रीकण्ठपदलाच्छनः पदवाक्यप्रमाणज्ञः भवभूतिर्नाम जातुकर्णीपुत्रः' इति।

महाकविरयं श्रीकण्ठः, रत्नखेटकः, कोटिसारः इत्येतत् नामत्रयमपि विभर्ति। अस्य नाटकेषु उत्तररामचरितं सर्वातिशायि वर्तते। अस्य नाटकस्य प्रथमाङ्क एव लोकापवादं श्रुत्वा लोकमर्यादारक्षणार्थं प्राणप्रियां वनसहचारिणीं सीतामपि परित्यक्तं प्रतिज्ञावतो रामभद्रस्य यत् सुदृढं निश्चयं, तेन निश्चयेन सहृदयहृदयक्षेत्रे यत् करुणाबीजवपनं, तदेव तृतीयाङ्के पुनर्जनस्थानं विलोकयतो रामस्य करुणविलापैः वासन्तोवचनविन्यासैः सीतायाः करुणभाषणैश्च देशकालादिसम्पत्या समङ्करितं पुष्पितं फलितश्च विलोक्यते। ईदृशी कल्पना इत पूर्वं न केनापि कविना प्रदर्शिता। प्रायः कविभिरमनुष्यकवेः उत्तररामचरितं नाटकम् एतस्य प्रतिभानिकषोपलमिति स्वीकृतम्। यदर्थमेषा सूक्तिः प्रसृता विलसति-'उत्तरे रामचरिते भवभूतिर्विशिष्यते' इति। अत्र इदमेव प्रधानकारणं यदस्मित्राटके कविः करुणरसस्य निर्वाहं सम्यक्प्रकारेण कृतवान्। यद्यपि पौराणिकेषु चरित्रेषु सीतारामयोः वियोगवर्णनं समुपलभ्येः किन्तु भारतीयनाट्यरचनायाः मर्यादानिर्वाहपूर्वकं करुणरसस्य अवतरणं कठिनतरं यत्रासौ कविः साफल्यं लब्धवान्॥

आर्योद्देश्यरत्नमाला

- **आश्रम के भेद :** जो सद्विद्यादि शुभ गुणों को ग्रहण तथा जितेन्द्रियता से आत्मा और शरीर के बल को बढ़ाने के लिए ब्रह्मचर्य, जो संतानोत्पत्ति और विद्यादि सब व्यवहारों को सिद्ध करने के लिए गृहस्थाश्रम, जो विचार के लिए वानप्रस्थ और जो सर्वोपकार करने के लिए संन्यासाश्रम होता है, वे चार आश्रम कहाते हैं।
- **यज्ञ :** जो अग्निहोत्र से ले के अश्वमेध-पर्यंत वा जो शिल्प-व्यवहार और जो पदार्थ-विज्ञान है, जो कि जगत् के उपकार के लिए किया जाता है है, उसको यज्ञ कहते हैं।
- **कर्म :** जो मन, इंद्रिय और शरीर में जीव चेष्टा विशेष करता है, वह कर्म कहाता है।

पं. गंगा प्रसाद उपाध्याय

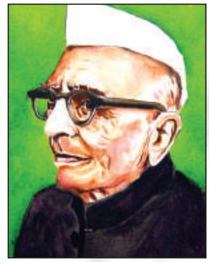

जन्मदिवस : 6 सित. पर शत्-शत् नमन

आर्यसमाज के लब्धप्रतिष्ठत लेखक, दार्शनिक तथा साहित्यकार पं. गंगाप्रसाद उपाध्याय का जन्म 6 सितम्बर 1881 को एटा जिले के नदरई नामक ग्राम में श्री कुंजबिहारी लाल के यहां हुआ। इन्होंने एमए अंग्रेजी तथा दर्शनशास्त्र में क्रमश: 1908 तथा 1912 में किया। प्रारम्भ में कुछ समय तक राजकीय स्कूलों में अध्यापन किया किन्तु 1918 में वहां से त्याग पत्र देकर डीएवी हाई स्कूल इलाहाबाद में मुख्याध्यापक के पद पर आ गये। 1936 में इस कार्य से अवकाश लेने के पश्चात उपाध्यायजी ने सर्वजीवन को आर्यसमाज के लिए ही समर्पित कर दिया। वे आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के प्रधान पद पर 1941 से 1944 पर्यंत रहे। तत्पश्चात सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के उपप्रधान 1943 तथा मंत्री 1946-1951 भी रहे। इसी बीच आप धर्म प्रचारार्थ दक्षिण अफ्रीका, थाईलैंड व सिंगापुर गये। 1959 में स्वामी दयानन्द दीक्षा शताब्दी के अवसर पर मथुरा में तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ. राजेद्र प्रसाद की अध्यक्षता में आपका सार्वदेशिक अभिनंदन किया गया तथा अभिनंदन ग्रंथ भेंट किया गया। अत्यंत वृद्ध हो जाने पर भी आप निरंतर अध्ययन व लेखन में लगे रहे। 29 अगस्त 1968 को आपका निधन हो गया।

जगद्‌गुरु स्वामी विरजानन्द

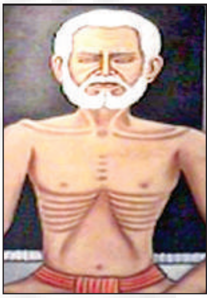

स्मृति दिवस : 14 सित. पर शत्-शत् नमन

पंजाब आर्यसमाज के अनेक संत, महात्मा और नेताओं की जन्मभूमि है। स्वनाम धन्य गुरु विरजानन्द का जन्म जालंधर जिले में करतारपुर के निकट गंगापुर ग्राम में सन् १७७९ ई. में पं. नारायणदत्त सारस्वत के यहां हुआ। उनके यहां दो पुत्रों ने जन्म लिया। बड़े का नाम धर्मचन्द और छोटे का बृजलाल रखा गया। विधि का विधान विचित्र है। पांच वर्ष से कम आयु में ही बृजलाल की आंखों की ज्योति चेचक से नष्ट हो गयी। आंख है तो संसार है। अभी तो बालक ने दुनिया को भली-भांति देखा भी नहीं था और उसकी दुनिया उजड़ भी गई। संभवत: विधाता ने किसी अतिविशिष्ट कार्य का उसे उत्तरदायित्व देना था, इसीलिए उसकी बाहर की दुनिया को बचपन में ही छीन लिया। आठवें वर्ष में उसके पिता ने गायत्री मंत्र की दीक्षा देकर स्वयं पढ़ाना प्रारम्भ किया। बालक की बुद्धि तार्किक और कुशाग्र थी।

तीन वर्ष में ही उसने सारस्वत व्याकरण और अमरकोष कण्ठस्थ कर लिये तथा संस्कृत भाषण करने में दक्षता प्राप्त कर ली। यद्यपि नेत्रहीन हो जाने से कुछ कार्यों को करने में उसे कठिनाई होती, परंतु माता-पिता का सहारा होने से वह इधर ध्यान नहीं देता था और अपनी पूरी शक्ति से विद्याग्रहण करने में जुटा रहता था। क्रूर विधाता को अभी भी संतोष नहीं था। बारहवें वर्ष में उसके माता-पिता भी चल बसे। अंधे की एक मात्र लाठी भी छीन ली गयी। अब वह नेत्रहीन होने के साथ अनाथ भी हो गया। माता-पिता की मृत्यु के पश्चात् कुछ दिन तो उसके बड़े भाई ने उसे प्यार से रखा, परंतु कुछ दिनों पश्चात् उसका व्यवहार बदल गया। बड़ा भाई और भाभी इस बालक को अपशब्द कहते और उसे दुत्कारने लगते। उसका पालन-पोषण उन्हें भार लगने लगा। भोजन के स्थान पर प्रताड़ना और गालियां सुननी पड़ती। बृजलाल प्रारम्भ से ही उग्र स्वभाव, स्वाभिमानी और स्पष्ट वक्ता थे। 'गंगा-तीरमपि त्यजन्ति मलिनं ते राजहंसा वयम्।' मलिन गंगा के तीर को छोड़ देने वाले राजहंस के समान आखिर में इस साहसी बालक ने 13वें वर्ष में गृहत्याग कर ही दिया। एक अल्पवयस्क बालक का गृहत्याग किस विवशता में हुआ होगा इसका सहज अनुमान लगाया जा सकता है। गृह त्याग के ढाई वर्ष पश्चात् बालक बृजलाल येन-केन प्रकारेण ऋषिकेश पहुंचे। आज से दो सौ वर्ष पहले का ऋषिकेश वर्तमान समय से सर्वथा भिन्न था। वहां घनी झाड़ियां थी, जिनमें दो प्रकार के प्राणी रहते थे। एक तो पर्णकुटी बना जंगली कंदमूल खाकर तप करने वाले तपस्वी संतजन और दूसरे सिंहादि हिंस्र जन्तु।

पंद्रह वर्ष के सुकुमार, नेत्रविहीन संत ने भी एक पर्णकुटी को रहने योग्य बनाकर गायत्री उपासना प्रारम्भ कर दी। यह बालक प्रात:काल गंगा में स्नान करने के पश्चात् कंठ तक गंगाजल में खड़ा रहकर घंटों गायत्री का जप करते रहते। कभी-कभी मंदिरों में जाकर भोजन कर लेते और शेष सारा समय गायत्री जप एवं प्रभु भक्ति में लगाते रहे। अंत में अशरण के शरण की कृपादृष्टि हुई। उसके ज्ञान-चक्षु खुल गये। तीन वर्ष तक कठोर तप, संयम, साधना ने उसे सिद्ध बना दिया। एक दिन रात्रि में अंतर्ध्वनि सुनाई दी- 'यहां जो होना था वह हो गया, अब तुम यहां से चले जाओ। बालक ने उसे ईश्वर आज्ञा मान अगले दिन ऋषिकेश छोड़ हरिद्वार के लिए प्रस्थान कर दिया।' 18वर्ष का युवक बीहड़ वन को पार कर हरिद्वार पहुंच गये। वहां उनकी भेंट दण्डी स्वामी पूर्णानंद से हुई। वे कौमुदी और अष्टाध्यायी के अच्छे ज्ञाता थे। उनके तप और विद्या की प्रशंसा सुन युवक ने सन् 1797 में उनसे संन्यास की दीक्षा ली और गुरु से दंडी स्वामी विरजानन्द सरस्वती नाम पाया। अपनी तपस्या से स्वामी जी ने ऋषि दयानन्द सरस्वती जैसे शिष्य को समाज के लिए तैयार किया। उन्होंने आर्यसमाज की स्थापना कर समाज व राष्ट्र का भला किया।

महाशय राजपाल

जन्मदिवस : 27 सित. पर शत्-शत् नमन

महाशय राजपाल का जन्म भारत की सुप्रसिद्ध सांस्कृतिक व ऐतिहासिक नगरी अमृतसर में पंचमी आषाढ़ संवत (सन् 1885) को हुआ था। यह काल भारतीय इतिहास में बड़ा महत्व रखता है। इस काल में राजपाल जी ने लाला रामदास जी के घर जन्म लेकर अपने कुल को धन्य कर दिया। लाला रामदास जी एक निर्धन खत्री थे। राजपाल प्रारम्भ से ही बहुत संस्कारी थे। वे बुद्धिमान, परिश्रमी व धीरधारी थे। पढ़ाई में बहुत योग्य थे। तब स्वजनों ने यह कल्पना नहीं की थी कि निर्धन कुल में जन्मा और एक सामान्य अर्जीनवीस का यह पुत्र इतिहास के पृष्ठों पर अपनी अमिट छाप छोड़ेगा। जब राजपाल जी छोटे ही थे, तब किसी कारण से उनके पिता घर छोड़कर कहीं निकल गए। उनका फिर कोई अता-पता ही न चला। इस समय बालक राजपाल स्कूल में पढ़ते थे। उनकी माता, वह स्वयं व छोटा भाई संतराम अब असहाय हो गए थे। दोनों भाइयों में राजपाल बड़े थे। पिताजी के होते हुए भी परिवार निर्धनता की चक्की में पिसता रहता था और उनके गृह त्याग से परिवार पर और अधिक विपदा आ पड़ी। राजपाल ने इसी दीन-हीन अवस्था में जैसे-तैसे मिडिल की परीक्षा उत्तीर्ण कर ली। वे पढ़ाई में कुशाग्रबुद्धि और परिश्रमी विद्यार्थी थे। विपत्तियों से घिरकर भी उन्होंने हिम्मत न हारी। कठिन परिस्थितियों ने आपके जीवन को और भी निखार दिया। उस युग में शिक्षा का प्रचलन बहुत कम था। मिडिल उत्तीर्ण का भी बड़ा आदर होता था, आसानी से नौकरी मिल जाती थी। राजपाल जी हाथ-पांव मारकर, किसी की सहायता से आगे भी बढ़ सकते थे, परन्तु प्यारी मां व भाई के निर्वाह का भार उनके ऊपर था। यह कर्तव्य उनको कुछ करने व कमाने के लिए प्रेरित कर रहा था। सोच-समझकर उन्होंने 'किताबत' का धंधा अपनाया। उर्दू की पुस्तक छापने से पहले कम्पोज़ नहीं की जाती थी। सुलेख लिखने वाले उन्हें एक विशेष कागज़ पर लिखते थे, इसी कला को 'किताबत' कहते हैं। फिर उनकी छपाई होती थी। सम्भवत: राजपाल जी की आरम्भ से ही लेखन-कला में रुचि थी। इसीलिए उन्होंने कातिब के रूप में कार्य आरम्भ कर दिया। दिन-रात परिवार के भरण-पोषण के लिए जी-जान से कार्य करते थे। पूज्य स्वामी स्वतंत्रानंद जी महाराज ने लिखा है कि सर्वप्रथम उन्होंने जिस पुस्तक को लिखा वह महर्षि दयानंद कृत 'संस्कार-विधि' का उर्दू अनुवाद था। स्वामी जी महाराज ने यह नहीं लिखा कि यह अनुवाद किसने व कहां से छपा था। खोज व जानकारी के अनुसार 'संस्कार-विधि' का प्रथम उर्दू अनुवाद महाशय पूर्णचंद जी ने किया था। वे कैरों, ज़िला अमृतसर के निवासी थे। यह अनुवाद उसी काल में प्रकाशित हुआ था, जब राजपाल ने मिडिल परीक्षा उत्तीर्ण की थी। आर्ष गुरुकुल नोएडा का छात्रावास महाशय राजपाल के नाम पर है।

महान क्रांतिकारी सरदार भगत सिंह

जन्मदिवस : 28 सित. पर शत्-शत् नमन

क्रांतिकारी भगत सिंह का जन्म 28 सितम्बर 1907 को पंजाब प्रांत, जिला-लायलपुर, के बावली गांव में हुआ था, जो अब पाकिस्तान का हिस्सा है। पाकिस्तान में भी भगत सिंह को आजादी के दीवाने की तरह याद किया जाता है। भगत सिंह के पिता का नाम सरदार किशन सिंह और माता का नाम विद्यावती कौर था। भगत सिंह के पांच भाई- रणवीर, कुलतार, राजिंदर, कुलबीर, जगत और तीन बहनें- प्रकाश कौर, अमर कौर एवं शकुंतला कौर थीं। अपने चाचा अजीत सिंह और पिता किशन सिंह के साये में बड़े हो रहे भगत सिंह बचपन से अंग्रेजों की ज्यादती और बर्बरता के किस्से सुनते आ रहे थे। यहां तक की उनके जन्म के समय उनके पिता जेल में थे। चाचा अजीत सिंह भी एक सक्रिय स्वतंत्रता सेनानी थे। भगत सिंह की पढ़ाई दयानंद एंग्लो वैदिक हाई स्कूल में हुई। भगत सिंह लाहौर के नेशनल कॉलेज से बी.ए. कर रहे थे तभी उनके देश प्रेम और मातृभूमि के प्रति कर्तव्य ने उनसे पढ़ाई छुड़वा कर देश की आजादी के पथ पर ला खड़ा किया। एक सामान्य नवयुवक के सपनों से अलग भगत सिंह का बस एक ही सपना था- 'आजादी'। और ऐसा लग रहा था कि भगत सिंह अपने देश अपनी मातृभूमि को अंग्रेजों से आजाद कराने के लिए ही सांसे ले रहे थे। जलियांवाला बाग में शांतिपूर्ण तरीके से सभा आयोजित करने के इरादे से इक्कठा हुए मासूम बेकसूर लोगों को जिस तरह से घेर कर मारा गया, उस घटना ने भगत सिंह को झकझोर कर रख दिया। जलियांवाला बाग में बच्चों, बूढ़ों, औरतों, और नौजवानों की भारी तादाद पर अंधाधुंध गोलियां बरसा कर अंग्रेजों ने अपने अमानवीय, क्रूर और घातकी होने का सबूत दिया था। बंदूक से निकली गोलियों से बचने के लिए मासूम लाचार लोग वहां ऊंची दीवारों से कूदने की कोशिश करते रहे। बाग में मौजूद पानी भरी बावली में कूदने लगे। जान बचाने की अफरातफरी में चीख पुकार करते उन लोगों पर जालिम अंग्रेजों को अत्याचार करते जरा भी दया नहीं आयी। जलियांवाला बाग में जब यह हत्याकांड हुआ तब भगत सिंह की उम्र केवल बारह साल थी। जलियांवाला बाग हत्याकांड की खबर मिलते ही नन्हें भगत सिंह बारह मील दूर तक चलकर हत्याकांड वाली जगह पर पहुंचे। जलियांवाला बाग पर हुए अमानवीय, बर्बर हत्याकांड के निशान चीख-चीख कर जैसे भगत सिंह को इंसानियत की मौत के मंजर की गवाही दे रहे थे।

हिन्दी दिवस पर विशेष

हिंदी दिवस प्रति वर्ष 14 सितम्बर को 'हिन्दी दिवस' के रूप में मनाया जाता है। 14 सितम्बर 1949 के दिन ही हिंदी को भारतीय संविधान द्वारा भारतीय गणराज्य की आधिकारिक भाषा का दर्जा दिया गया था। इसके अतिरिक्त हिंदी को बढ़ावा देने के लिए, हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए वातावरण पैदा करने के उद्देश्य से और हिंदी के प्रति लोगों में जागरूकता पैदा करने के उद्देश्य से हिंदी दिवस मनाया जाता है।

हिंदी दिवस उस दिन की याद में मनाया जाता है जिस दिन हिंदी हमारी आधिकारिक भाषा बनी। आज हमारी सरकार द्वारा हिंदी को बढ़ावा देने के लिए कई तरह के कार्यक्रम चलाए जाए हैं। हिंदी दिवस के दिन कॉलेज और स्कूल स्तर पर विद्यार्थियों को हिंदी का महत्व बताया जाता है। इस दिन सभी सरकारी कार्यालयों में विभिन्न विषयों पर हिंदी में व्याख्यान आयोजित किये जाते हैं। हिंदी को बढ़ावा देने के लिए हमारी वर्तमान सरकार का कदम सराहनीय है। आज देश के नेता विदेशों में जाकर भी हिंदी में भाषण देने को महत्ता दे रहे हैं। ऐसा इसलिए किया जा रहा है ताकि भारत के साथ-साथ विश्व स्तर पर भी हिंदी भाषा का महत्व समझा जाए। यह हमारी सरकार के प्रयासों का ही नतीजा है तो हिंदी बोलने वालों की संख्या में लगातार इजाफा होता दिख रहा है। बिहार देश का पहला राज्य था जिसने हिंदी को अपनी आधिकारिक भाषा के तौर पर अपनाया था। हालांकि इस बात को नकारा नहीं जा सकता कि भारत में अंग्रेजी बोलने वाले लोगों की तादाद में लगातार इजाफा हो रहा है, लेकिन आज भी देश में हिंदी बोलने वालों की संख्या सबसे ज्यादा है। देश की जनता का एक बड़ा हिस्सा आज भी हिंदी बोलता है। उत्तर भारत के कई राज्यों जैसे उत्तर प्रदेश, बिहार, राजस्थान, उत्तराखंड, हरियाणा, झारखंड आदि में एक बड़ी आबादी हिंदी भाषी लोगों की है। इस बात को हमें हमेशा याद रखना चाहिये कि अपनी मात्र भाषा बोलने से न केवल हम अपनी संस्कृति से जुड़े रहते हैं बल्कि यह हमें एक दूसरे के करीब लाने का जरिया भी है।

यह सत्य है कि अंग्रेजी भाषा का इस्तेमाल दिनों दिन बढ़ता जा रहा है। ऐसा इसलिए है क्योंकि अंग्रेजी एक ऐसा माध्यम है जिसका विश्व स्तर पर सबसे ज्यादा इस्तेमाल किया जाता है। यही वजह है कि हम लोगों को अंग्रेजी सीखनी पड़ती है, लेकिन इसका मतलब यह बिल्कुल भी नहीं है कि हम अपनी मात्र भाषा को बोलने या सीखने में संकोच करें। अगर हम ऐसा करेंगे तो यह विलुप्त होने की कगार पर पहुंच जाएगी। आज विश्व में ऐसे देश भी है जो अपने देश में केवल अपनी भाषा में ही काम को महत्व देते हैं। रूस, चीन, जापान ऐसे ही उदाहरण है इन देशों में इनकी ही भाषा में काम को महत्व दिया जाता है और यह वजह है कि इनकी भाषा लगातार फल-फूल रही है। क्या ऐसा हमारे देश में होना संभव नहीं? यकीनन ऐसा संभव है, लेकिन उसके लिए हम सबको सोचना होगा। आज अंग्रेजी विश्व की भाषा इसलिए बन पाई क्योंकि अंग्रेजों ने अंग्रेजी को हमेशा जिंदा रखा। वह जहां भी गए उन्हें केवल अंग्रेजी में ही काम और संवाद को महत्ता दी। जिस देश को भी अंग्रेजों ने उपनिवेश बनाया वहां वह अपनी संस्कृति और सभ्यता के निशान छोड़ते गए और देखते ही देखते उनकी सभ्यता और संस्कृति को पूरे विश्व ने अपना लिया। ऐसा हमारी हिंदी के साथ भी हो सकता है, लेकिन इसके लिए हमें लगातार प्रयास करते रहने होंगे। तभी हिंदी को विश्व पटल पर ले जाया जा सकता है।

"हिंदी हैं हम, वतन है हिंदोस्तां हमारा"

कौन ईश्वर को प्राप्त हो सकते हैं- पवित्रं ते विततं ब्रह्मणस्पते प्रभुर्गात्राणि पर्येषि विश्वतः। अतप्ततनूर्न तदामो अश्नुते शृतास इद्वहन्तस्तत्समाशत॥ -ऋग्वेद : मंडल 9, सूक्त 83, मंत्र 1

अर्थ : हे ब्रह्माण्ड और वेदों के पालन करने वाले प्रभु, सर्वसामर्थ्ययुक्त सर्वशक्तिमन्! आपने अपनी व्याप्ति से संसार के सब अवयवों को व्याप्त कर रखा है। आपका जो व्यापक पवित्र स्वरूप है, उसको ब्रह्मचर्य, सत्यभाषण, शम, दम, योगाभ्यास, जितेन्द्रिय, सत्संगादि तपश्चर्या से रहित जो अपरिपक्व आत्मा अन्तःकरणयुक्त है, वह उस तेरे स्वरूप को प्राप्त नहीं होता और जो पूर्वोक्त तप से शुद्ध हैं, वे ही इस तप का आचरण करते हुए उस तेरे शुद्ध स्वरूप को अच्छे प्रकार प्राप्त होते हैं।

प्रस्तुतकर्ता : भावेश मेरजा

मनुष्य मांसाहारी या शाकाहारी...

हवा-पानी-भोजन सभी जीवधारियों के जीवन आधार है। हवा-पानी साफ हो प्रदूषित न हो, यह भी सर्वमान्य है। मनुष्य को छोड़कर शेष सभी शरीरधारी अपने भोजन के बारे में भी स्पष्ट है उनका भोजन क्या है? यह कितनी बड़ी विड़म्बना है कि सबसे बुद्धिमान शरीरधारी मनुष्य अपने भोजन के बारे में स्पष्ट नहीं है। मैं अपने मनुष्य बंधुओं से यह बात कहते हुए क्षमा चाहूंगा कि भोजन के निर्णय में मनुष्य की स्थिति एक गधे से भी नीचे है। मनुष्य को भोजन के बारे में बताने वाले डॉक्टर, वैज्ञानिक, अर्थशास्त्री, धर्मगुरु दोगली बातें करते हैं। स्पष्ट निर्णय किससे लें? भोजन के बारे में स्पष्ट निर्णय हमें सिद्धांत से ही मिल सकता है, क्योंकि सिद्धांत सर्वोपरी होता है। हम यह निर्णय करें कि मनुष्य का भोजन क्या है? कुछ आधारभूत बातों के आधार पर करेंगे। ये आधारभूत बातें इस प्रकार हैं-

1. किसी मशीन के बारे में जानकारी, प्रयोग करने वाले से बनाने वाले को अधिक होती है। **2.** मशीन का ईंधन और शरीर का भोजन उसकी बनावट के अनुसार निश्चित होता है। **3.** उपयुक्त (बनावट के अनुसार) ईंधन व भोजन से मशीन व शरीर अच्छा काम करेंगे-देर तक कार्य करेंगे अन्यथा ईंधन या भोजन से कम काम करेंगे और शीघ्र खराब हो जायेंगे। **4.** ईंधन या भोजन वह पदार्थ है, जिससे मशीन कार्य करे और शरीर जीवित रहे। जिस पदार्थ को शरीर में भोजन रूप में डाला जाये और शरीर जीवित न रहे, वह भोजन नहीं हो सकता। **5.** सभी शरीर ईश्वर ने बनाए या प्रकृति ने बनाये। एक भी शरीर किसी डॉक्टर, वैज्ञानिक, अर्थशास्त्री या धर्मगुरु ने नहीं बनाया। **6.** हम सृष्टि में अपने चारों ओर दो प्रकार के शरीर देख रहे हैं- मांसाहारी और शाकाहारी।

यहां 1, 2, 5 और 6 के आधार पर निर्णय करेंगे कि मनुष्य का भोजन मांसाहार है या शाकाहार है? सभी शरीर ईश्वर या प्रकृति ने बनाये, ईश्वर या प्रकृति की जानकारी मनुष्य से अधिक है और भोजन बनावट के हिसाब से होता है। हमारे सामने दो प्रकार के शरीर मांसाहारी (शेर, चीता, तेंदुआ, भेड़िया आदि) और शाकाहारी (गाय, घोड़ा, हाथी आदि) उपस्थित हैं, तो सबसे आधारभूत बात है कि भोजन शरीर की बनावट के हिसाब से शरीर बनाने वाले ईश्वर या प्रकृति ने निश्चित किया है और ईश्वर या प्रकृति की बात मनुष्य के मुकाबले ज्यादा ठीक होगी, इस आधार का प्रयोग करके हम मनुष्य का भोजन निश्चित करेंगे। उस निर्णय के लिये हम शाकाहारी और मांसाहारी के शरीरों की बनावट की तुलना करते हैं और देखते हैं कि मनुष्य शरीर की बनावट किससे मेल खाती है? मनुष्य शरीर की रचना शाकाहारी शरीरों जैसी है, तो मनुष्य का भोजन शाकाहार और यदि रचना मांसाहारी शरीरों से मेल खाती है, तो मनुष्य का भोजन मांसाहार होगा। यह अंतिम निर्णय होगा और हमें किसी धर्मगुरु, वैज्ञानिक या डॉक्टर से पूछने की आवश्यकता नहीं हैं, क्योंकि ईश्वर या प्रकृति के मुकाबले इनकी कोई औकात नहीं होती और वैसे भी मनुष्य का निष्पक्ष होना बड़ा मुश्किल होता है। मांसाहारी और शाकाहारी शरीरों की तुलनात्मक जानकारी दी जा रही है-

1. मांसाहारी - आंखें गोल होती है, अंधेरे में देख सकती है, अंधेरे में चमकती है और जन्म के 5-6 दिन बाद खुलती हैं। शाकाहारी- आंखे लम्बी होती हैं, अंधेरे में चमकती नहीं और अंधेरे में देख नहीं सकती और जन्म के साथ ही खुलती हैं। **2.** मांसाहारी- सूंघने की शक्ति बहुत अधिक होती है। शाकाहारी- सूंघने की शक्ति मांसाहारियों से बहुत कम होती है। **3.** मांसाहारी- बहुत अधिक आवृत्ति वाली आवाज को सुन लेते हैं। शाकाहारी- बहुत अधिक आवृत्ति वाली आवाज को नहीं सुन पाते हैं। **4.** मांसाहारी- दांत नुकीले होते हैं। मुंह में दांत ही होते हैं, दाढ़ नहीं होती हैं और दांत एक बार ही आते हैं। शाकाहारी- दांत और दाढ़ दोनों होते हैं, चपटे होते हैं और एक बार गिर कर दोबारा आते हैं। **5.** मांसाहारी - ये मांस को फाड़ कर निगलते हैं, तो इनका जबड़ा केवल ऊपर-नीचे चलता है। शाकाहारी- ये भोजन को पीसते हैं, तो इनका जबड़ा ऊपर-नीचे और बायें-दायें चलता है।

मनुष्य का भोजन शाकाहार है, मांसाहार कतई नहीं। हमें निश्चिन्त होकर शाकाहार करना चाहिये और मांसाहार से होने वाली अनेक प्रकार की हानियों से बचना चाहिये। शाकाहार में मानव का कल्याण है और मांसाहार विनाशकारी है। प्राकृतिक सिद्धांत की उपेक्षा करके होने वाले विनाश से बचने का कोई मार्ग नहीं है।

■■ डॉ. भूप सिंह

लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक

लोकमान्य बालगंगाधर तिलक जी की 100वीं पुण्य तिथी पर उनके जीवन से प्रेरणा लेने के कारण प्रेरणा शताब्दी दिवस के समान है। 'स्वराज मेरा जन्म सिद्ध अधिकार है' के उद्घोषक बाल गंगाधर तिलक ने आजादी की लड़ाई में सशक्त भूमिका निभाई थी। बिखरे समाज को संगठित करके उन्होंने गणेश उत्सवों तथा शिवाजी जन्म उत्सवों की प्रेरक परंपरा शुरू कराई। यह उदगार उत्तरी दिल्ली के महापौर श्री जयप्रकाश जी ने लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक की प्रेरणा शताब्दी पर कहे। यह विचार उन्होंने वरिष्ठ पत्रकार चंद्रमोहन आर्य की लोकमान्य बालबंगाधर तिलक पर पुस्तक का लोकार्पण करते हुए सिविक सेंटर नई दिल्ली में कहे।

कार्यक्रम के स्वागत-अध्यक्ष व पूर्व पार्षद श्री यशपाल आर्य ने कहा कि वर्तमान परिस्थितियों में अपने महापुरुषों के प्रति हमारी सच्ची श्रद्धांजलि यही होगी कि हम अधिक से अधिक स्वदेशी वस्तुओं का प्रयोग करें। अंतर्राष्ट्रीय ख्याति के वैदिक विद्वान आचार्य चंद्रशेखर शास्त्री ने कहा कि कारावास की भीषण यातनाएं सहते हुए बाल गंगाधर तिलक का जीवन संतों जैसा हो गया था। उन्होंने कई पत्रिकाओं के माध्यम से क्रांति का शंखनाद किया। आचार्य श्री ने तिलक जी के वचनों को दोहराते हुए कहा कि महान उपलब्धियां कभी भी आसानी से नहीं मिलती और आसानी से मिली उपलब्धियां महान नहीं होती। उद्योगपति 'बीकानेरवाला' के निर्देशक श्री नवरतन अग्रवाल ने कहा की हमें देश व समाज के लिए

बाल गंगाधर तिलक

कल्याणकारी कार्यों को प्रोत्साहित करने कि आवश्यकता है। ओमेगा फाउंडेशन के महामंत्री श्री जय सिंह कटारिया ने कहा कि महान संपादक तथा स्वतंत्रता सेनानी लाला जगतनारायण सहित हजारों देशभक्तों ने लोकमान्य तिलक से नई स्फूर्ति पाई। इस अवसर पर सत्यानंद आर्य, सुरेंद्र कोछड़, सुदेश आर्य, रोहन शर्मा, जितेंद्र भाटिया तथा ललित चौधरी आदि गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। इस अवसर पर श्री नवरतन अग्रवाल जी (डायरेक्टर-बीकानेरवाला फ्रूट्स प्राइवेट लिमिटेड), आचार्य चंद्रशेखर शास्त्री जी (संपादक-अध्यात्म-पथ), श्री यशपाल आर्य जी (पूर्व चेयरमैन-शिक्षा समिति), श्री जयप्रकाश जी (महापौर-उत्तरी दिल्ली), श्री चंद्रमोहन आर्य जी एवं श्री जयसिंह कटारिया जी (डायरेक्टर)।

हम अनुभव करते हैं कि इस अवसर पर देशवासियों को देश की आजादी के लिये समर्पित व अपने प्राण न्योछावर करने वाले बालगंगाधर तिलक जी के जीवन का अध्ययन करना चाहिये और उनसे प्रेरणा ग्रहण कर उनके बताये मार्ग पर चलना चाहिये। तिलक जी का नाम लेते ही उनके शब्द 'स्वतंत्रता मेरा जन्म सिद्ध अधिकार है और मैं उसे पाकर पहूंगा।' कानों में झंकृत होने लगते हैं। इस विषय में यह जानने योग्य है कि 1883 में ऋषि दयानन्द ने देश की आजादी की नींव रखी थी। उन्होंने अपने विश्व प्रसिद्ध ग्रंथ 'सत्यार्थप्रकाश' में लिखा था 'कि कोई कितना ही करे परंतु जो स्वदेशीय राज्य होता है वह सर्वोपरि उत्तम होता है। अथवा मत-मतान्तर के आग्रहरहित, अपने और पराये का पक्षपातशून्य, प्रजा पर पिता-माता के समान कृपा, न्याय और दया के साथ विदेशियों का राज्य भी पूर्ण सुखदायक नहीं है।' ऋषि दयानन्द के इन वचनों के भावों का ही रूपान्तर तिलक जी के 'स्वतंत्रता मेरा जन्म सिद्ध अधिकार है और मैं इसे पाकर रहूंगा।' में देखने को मिलता है। आज बाल गंगाधर तिलक जी की 100वीं पुण्यतिथि व प्रेरणा दिवस पर हम उनको सश्रद्ध अपने श्रद्धा सुमन अर्पित करते हैं।

लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक जी का संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है। बाल गंगाधर तिलक (अथवा लोकमान्य तिलक, मूल नाम केशव गंगाधर तिलक, जन्म: 23 जुलाई 1856, मृत्यु: 1 अगस्त 1920), एक भारतीय राष्ट्रवादी, शिक्षक, समाज सुधारक, वकील और एक स्वतंत्रता सेनानी थे। ये भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के पहले लोकप्रिय नेता हुए। ब्रिटिश औपनिवेशिक प्राधिकारी उन्हें 'भारतीय अशांति के पिता' कहते थे। उन्हें, 'लोकमान्य' का आदरणीय शीर्षक भी प्राप्त हुआ, जिसका अर्थ हैं लोगों द्वारा स्वीकृत। तिलक जी ब्रिटिश राज के दौरान स्वराज के सबसे पहले और मजबूत अधिवक्ताओं में से एक थे। वह भारतीय अंत:करण में एक प्रबल आमूल परिवर्तनवादी नेता थे।

मनमोहन कुमार आर्य

शिक्षा में सेक्युलरिज़्म की अफीम

भारत सरकार ने जब से नई शिक्षा नीति का प्रारूप सार्वजनिक किया है तब से वामी, कांगी, अर्बन नक्सल रो रहे हैं क्योंकि इनका बनाया भ्रम जाल टूट रहा है

देश की शिक्षा व्यवस्था में सुधार की मांग अक्सर उठती रहती है, क्योंकि पाठ्यक्रम और एनसीईआरटी में तथ्यों की विश्वसनीयता शक के घेरे में है। आज की तारीख में इतिहास है। 1. हिन्दू सदैव असहिष्णु थे 2. मुस्लिम इतिहास की साम्प्रदायिकता को सहानुभूति की नजर से देखा जाये हमारे विश्वविद्यालयों में- गुरु तेग बहादुर, गुरु गोबिंद सिंह, बंदा बैरागी, हरी सिंह नलवा, राजा सुहेल देव, दुर्गा दास राठौर के बारे में कुछ नहीं बताया जाता- लेखक नीरज अत्री ने इस पर वृहद रिसर्च किया है। इन पुस्तकों में एक तरफ मुगलों और इस्लामिक शासकों को बढ़ा-चढ़ाकर दिखाया गया है, वहीं दूसरी तरफ हिन्दू राज्यों को ऐसे प्रस्तुत किया गया है, जैसे उनकी कोई विशेषता ही न हो।

एनसीईआरटी के माध्यम से ऐसा नैरेटिव बनाया जाता है जैसे ब्राह्मण बाहर से आए थे और उन्होंने यहां के लोगों का शोषण किया है। अत्री ने एनसीईआरटी में तथ्यों के साथ हुए इस छेड़छाड़ के लिए 100 से भी अधिक आरटीआई लगाए। उन्होंने एनसीई-आरटी पुस्तकों के बारे में बताया कि सरकार के आने के बाद उसमें आर्य-द्रविड़ की थ्योरी परोसी गई, जिससे बच्चों के मन में गलत धारणाएं बैठीं।

डॉक्टर भीमराव अंबेडकर ने पूरी रिसर्च कर इसे पहले ही गलत साबित किया था। उन्होंने बताया कि तमिलनाडु के पेरियार ने इन चीजों को हवा दी थी। इतिहास का लक्ष्य होता है कि बच्चों को उनकी गौरवमयी इतिहास पढ़ाया जाए और अतीत में हुई गलतियों से सीख ली जाए। इसके लिए उन्होंने पाकिस्तान और अमेरिका का उदाहरण दिया। भारत सबसे पुरानी सभ्यता है और हमारे पास गौरव करने के लिए इतनी चीजें हैं, फिर भी हम अकेले देश हैं जो अपने ही बच्चों का आत्मविश्वास खत्म करता है। बताता है कि आपके देश में महिलाओं का शोषण होता है।

जैसे- अगर एक बच्चा पढ़ेगा कि शूद्रों या महिलाओं को वेद पढ़ने का अधिकार नहीं हैं तो उन पर क्या असर पड़ेगा? वेदों में महिलाओं ने ऋचाएं लिखी हैं। मनुस्मृति को इतनी गाली दी जाती है, लेकिन उसी मनुस्मृति में लिखा है कि जब एक बच्चे का जन्म होता है तो उसे शूद्र कहा जाता है। इसका अर्थ है कि जिन्हें शूद्र की परिभाषा तक नहीं पता है, वो भारत-विरोधी चीजें पढ़ाने में इसका इस्तेमाल कर रहे हैं।

मनुस्मृति भी दो तरह की बाजार में मिलती है। इनमें से एक क्रिटिकल एडिशन है। दूसरे वाले में काफी गलत चीजें लिखी हुई हैं, जिससे पता चलता है कि बाद में उससे काफी छेड़छाड़ की गई और नैरेटिव गढ़ने के लिए उसका इस्तेमाल किया गया। उन्होंने बताया कि एनसीईआरटी ने इसे ऐसे पेश किया, जैसे प्राचीन काल में कानून की यही एकमात्र किताब थी। मनुस्मृति मनु का विचार है, जो वो कुछ ऋषियों को बताते हैं। उन्हें ऐसा प्रमाण नहीं मिलता है, जहां प्राचीन राजाओं में से किसी ने कहा हो कि उनका शासन मनुस्मृति के हिसाब से चलेगा। सन्दर्भ से अलग हटाकर चीजों को पेश कर उसका अर्थ बदल दिया जाता है। इन पुस्तकों में पढ़ाया गया कि सीमा विवाद के समय मनुस्मृति में प्रावधान है कि राजा को छिपाकर बाउंड्री की मार्किंग करनी चाहिए। इसके बाद बच्चों से पूछा जाता है कि क्या इससे समस्याएं सुलझेंगी?

असली मनुस्मृति में सीमा की मार्किंग के लिए फल-फूल के पेड़ लगाने की बात कही गई है। देवालय और तालाब बनाने की बात कही गई है। कहीं भी विवादों को सुलझाने के लिए अजीबोंगरीब प्रावधानों का जिक्र नहीं है। उन्होंने एनसीईआरटी की सातवीं की पुस्तक का एक उदाहरण दिया। उसमें लिखा है कि राजपूतों के उद्भव के साथ कई ट्राइब्स ने खुद को जाति व्यवस्था का हिस्सा बनाया, लेकिन रूलिंग कास्ट को ज्वाइन करने की किसी को इजाजत नहीं दी। साथ ही लिखा है कि जिन्होंने जाति व्यवस्था को नकार दिया, उन्होंने इस्लाम अपना लिया।

नालंदा विश्वविद्यालय के सम्बन्ध में भ्रान्ति फैलाई गई है कि दो ब्राह्मणों ने उसे जला दिया, क्योंकि वे वहां के छात्रों की हरकत से गुस्सा हो गए थे। डीएन झा खुद को कम्युनिस्ट बताते हैं और चमत्कार में विश्वास नहीं रखते। लेकिन यहां पर उन्होंने दैवीय शक्ति से पानी का झरना फूटने से लेकर सिद्धि से आग लगने तक की बातों को स्वीकार किया है। इसी तरह की कई भ्रांतियां वामपंथियों ने कहीं-कहीं से लाकर फैलाई है।

नीरज अत्री

Vedas on Animal Sacrifice

Article by Dr. Vivek Arya

This is again a big misconception that the Vedas supports Animal Sacrifice in Yajnas. The main reason for this misconception is wrong interpretation of the Vedic Mantras. In the middle ages a class of ignorant pundits arise in scenario who were fond of meat eating. To support their sinful act they started wrong interpretation of the Vedic Mantras. This unjustified act lead to killing of countless innocent animals on name of Vedas. More than that it brought mischief to the name of Vedas as Holy Texts.There are many evidences from the Vedas which proves that Vedas never supports any violence in form of Animal Sacrifice.

Vedas against Animal Sacrifice Look on all (Humans as well as Animals) with the eye of a friend. (Yajur Veda).Friend to all should the Arya be! Friend to all! Sure he cannot destroy the life of any. Therefore he is ordered in the sacred scriptures. (Yajur 42-49).” Thou shalt not kill the horse; thou shalt not kill the cow; thou shalt not kill the sheep or goat; thou shalt not kill the bipeds;oh man! Protect the gregarious deer; kill not the milch or otherwise useful animals.” Elsewhere the scripture says: “They that trouble others for the sake of their own good are Rakshas and they that eat the flesh of birds and beasts are Pishachas (devils) (Yajur 34-51).

For flesh-eating, drinking, gambling and adultery, all, destroy and mar the mental faculties of a man (Atharva VI.7-70-71) They are sinners as eat raw or cooked flesh or eggs go to destruction. (Atharva VIII.2-26-23). The Veda considers the protection of animals to be a very sacred act—so, so very sacred that it lays down that a husband should solemnly ask his wife on the occasion of marriage “to be kind to animals and to try to protect the happiness of all bipeds and quadrupeds.” In return the husband promises to do the same.Further the Veda lays down that they who kill men or slay cows should be outlawed and ostracised (Rig I.16-114). We must also learn about the meaning of word Yajna. The Yajna word is derived from Diva which has the following meanings: 1 Krida.. Play and Diversion. 2 Vijigisha.. Desire for Victory. 3 Vyavahar. Social Relations. 4 Dyuti.. Sight. 5 Stuti.. Praise. 6 Moda.. Happiness. 7 Mada.. Self-Consciousness. 8 Swapana.. Negation of motion. 9 Kanti.. Glory. 10. Gatishu.. Knowledge, motion, and attainment.

Thus Yajna may be defined as “the association of men and concentration of powers for social happiness, conquest over nature or enemy; promotion of the well-being of society; the propagation and dissemination of enlightened principles; the maintenance of national self-respect; the increase of national glory; and the cultivation of acts of peace and war. It may also be added that Yajna also means such concentrated effort as secures man spiritual advancement and salvation. That the word Yajna was used in the above sense by the Vedic Aryas may be established by referring to certain well-known practices of the Rishis. A great mischief has been caused by the misinterpretation of this Yajna. To understand the true significance of this Yajna we must understand what Ashwa is. As it is usually with the Vedic words, this word has a great number of meanings.

देश में राफेल आ गया

देश में राफेल आ गया
काल का भी काल आ गया।
सोचते हैं पाक-चाइना
जान का बबाल आ गया।
मछलियों से कह रहे मगर
सावधान जाल आ गया।
उड़ रहा गगन में गरुड़ सा
गर्वोन्नत भाल आ गया।
शत्रुओं के भाग्य का सुनो
आंसुओं का ताल आ गया।
सैनिकों में जोश भर गया
रक्त में उबाल आ गया।
भारती की वन्दना करो
आरती का थाल आ गया।
ड्रैगनों के पूंछ फण कुचल
खींचने को खाल आ गया।
बोल नभ निहाल हो गया
सत सिरी अकाल आ गया।
नाचने लगे हैं 'मनीषी'
केसरी का लाल आ गया।
जय हिंद! जय भारत!!

➲ **डा. सारस्वत मोहन मनीषी**

प्रभुवर! पुनः पुनः दो हमको

सुन्दर नर तन मन मधुवन को। प्रभुवर! पुनः पुनः दो हमको।।
सुखकर दीर्घ आयु फिर पायें, फिर प्राणों का ओज जगायें।।
फिर से आत्मबोध अपनायें। मंगल दृष्टिकोण के धन को।।
होवें सक्षम श्रोत्र हमारे, तज कर जग को प्रेय पुकारे।।
फिर से साधन श्रेय सुधारें। विज्ञान विमल के दर्पण को।।
दुःख दूरित दूर उर करो मधुर, हो हृदय अहिंसक सर्व सुखर।।
हे जठर अनल हे वैश्वानर, कर्मठ ललाम नव परपन को।।
प्रभुवर! पुनः पुनः दो हमको।।

➲ **शिवा आर्य**

ऋषि महिमा

वेद की ज्योति दिखाकर, हम सबको जगा गया जो,
ऐ आर्य जगत के लोगों! जय दयानन्द की बोलो।।
वैदिक धर्म का सूरज, जब अस्त होने लगा था,
गुजरात प्रान्त में तब एक, बालक को बोध हुआ था।
वह बालक था मूलशंकर, जो बना महाऋषि लोगों,
ऐ आर्य जगत के लोगों !........

नारी की परख परिस्थिति, उसको सम्मान दिलाया,
वेद-पाठ यज्ञ करने का, ऋषि ने अधिकार दिलाया।
गौ-वध को देख ऋषि ने, गौ-रक्षा आन्दोलन चलाया।
ऋषि ने उपकार किये जो, उनको तो तुम मत भूलो,
ऐ आर्य जगत के लोगों !........

देश गुलाम बना था, था राज्य विदेशी छाया,
ऋषि ने ही स्वतन्त्रता का, सर्व प्रथम था पाठ पढ़ाया,
कहा ऐ भारत के वीरों, स्वराज्य स्थापित कर लो।
ऐ आर्य-जगत के लोगों !........

शास्त्रार्थ का शस्त्र चलाकर, वेद-ज्ञान का सूर्य उगाया,
ऋषि ने हमें अमृत पिलाया, फिर भी उसे जहर पिलाया,
जब अन्त समय आया तो- कहा ईश तेरी इच्छा पूर्ण हो,
वेद-ज्योति फैलाना आर्य वीरों- लेकर आर्य समाज की मशाल को।

था धन्य ऋषि वो अपना, है धन्य कार्य सब उनके,
जन-कल्याण की खातिर, आत्मोत्सर्ग कर गया जो।
जय महा-ऋषि !! जय महा-ऋषि !!

➲ **संकलन : आर्ष गुरुकुल , नोएडा**

श्राद्ध-तर्पण

श्रद्धा से जो काम किया जाए उसे श्राद्ध कहते हैं। तृप्ति करने का नाम तर्पण है। पितरों का श्राद्ध और तर्पण करना चाहिए, वर्ष में एक दो बार ही नहीं अपितु प्रतिदिन करना चाहिए। इस संबंध में मुख्य प्रश्न यह है कि पितर कौन हैं? शास्त्रों के अनुसार जीवित वृद्ध माता-पिता, दादा-दादी, नाना-नानी आदि तथा कोई भी विद्वान परोपकारी मनुष्य पितर कहलाते हैं। इन सबको भोजन, वस्त्र, मधुर, भाषण, मान-सम्मान आदि से संतुष्ट रखना प्रत्येक गृहस्थ का कर्तव्य है, यही इनका श्राद्ध और तर्पण है।

जो मनुष्य मर चुके हैं, उन पर ये बातें लागू नहीं होतीं। इसलिए मरे हुए को पितर कहना गलत है। वैसे भी जो मर चुके हैं वे अपने कर्मों के अनुसार ईश्वर की व्यवस्था से दूसरे शरीरों में चले गए हैं। वे अब कहां किस मनुष्य या पशु, पक्षी आदि के शरीर में हैं यह भी ईश्वर के सिवाय और कोई नहीं जानता। इसलिए उनका श्राद्ध और तर्पण बिल्कुल असंगत सी बात है। यजुर्वेद में कहा है- भस्मान्तं शरीरम्। अर्थात मनुष्य शरीर के प्रति हमारा कर्तव्य कर्म उसके मरने पर उसका दाह संस्कार करने तक ही है, उसके पश्चात् कुछ भी नहीं है।

मनुष्य का अन्य मनुष्यों से संबंध केवल तब तक है जब तक वह जीवित है। मरने के पश्चात् उसका उनसे कोई भी नाता नहीं रहता। मरने के पश्चात् उसके निमित्त किए हुए दान पुण्य आदि का फल भी उस मरने वाले को नहीं मिलता। किसी भी शुभ-अशुभ कर्म का फल उसके कर्ता को ही मिला करता है, अन्य को नहीं।

नायं परस्य सुकृतं दुष्कृतं चापि सेवते।
करोति यादृशं कर्म तादृशं प्रतिपद्यते।।

(महाभारत, शांतिपर्व)

अर्थ : यह जीव दूसरे के पाप या पुण्य का सेवन नहीं करता है। जैसा कर्म स्वयं करता है वैसा ही फल भोगता है।

जेष्ठो भ्राता पिता वापि यश्च विद्यां प्रयच्छति। त्रयस्ते पितरो ज्ञेयाः धर्मे च पथि वर्तिनः।। (वालमीकि रामायण)

अर्थ : बड़ा भाई, पिता और विद्या देने वाला- ये तीनों तथा धर्म (न्याय) के मार्ग पर चलने वाला पितर जानने चाहिए।

राष्ट्रीय जागरण के सूत्रधार महर्षि दयानन्द

(पृष्ठ 3 का शेष)

में इतनी शक्ति है कि जीवन तत्व से अभीष्ट स्वरूप वाली मूर्ति गढ़ सके तथा कल्पना को क्रिया में परिणत कर सके। वे स्वयं दृढ़ चट्टान थे। उनमें दृढ़ शक्ति थी कि चट्टानों पर हमला कर उन्हें सुदृढ़ तथा सुड़ौल बना सके।

19वीं शताब्दी में भारत माता के धरातल पर गुजरात प्रदेश की पावन भूमि में महर्षि दयानन्द के रूप में एक दैदीप्यमान नक्षत्र, वेद ज्ञान के सूर्य का उदय हुआ। उन्हीं की वाणी और लेखनी से स्वतंत्रता शब्द निकला। यह स्वतंत्रता का शब्द उन्हीं की लेखनी से प्रगट हुआ है। देश की आजादी की बात सर्वप्रथम महर्षि दयानन्द के विचार एवं उनके मस्तिष्क की ही देन है।

यदि देश की स्वतंत्रता का सत्य-सत्य इतिहास जानना हो तो महर्षि दयानन्द को पहले जानना होगा। उन्होंने अपनी अमरकृति सत्यार्थ प्रकाश के आठवें समुल्लास में स्पष्ट लिखा है कि कोई कितना ही करे परंतु जो स्वदेशीय राज्य होता है, वह सर्वोपरि उत्तम होता है। मतमतांतर के आग्रह रहित अपने और पराए का पक्षपात शून्य, प्रजा पर माता-पिता के समान कृपा, न्याय और दया के साथ विदेशियों का राज्य भी पूर्ण सुखदायक नहीं है।

अत: आजादी के सर्व प्रथम मंत्रदाता महर्षि दयानन्द ही थे। उन्होंने ही आजादी का शंखनाद करके स्वतंत्रता संग्राम का बिगुल बजाया। वह केवल धार्मिक संत ही नहीं थे अपितु राजऋषि भी थे। भारत माता की पराधीनता और देश की दशा पर वह अत्यंत चिंतित रहते थे। महर्षि दयानन्द ने सैनिक छांवनियों में जा जाकर और भारतीय सैनिकों को उपदेश दे-देकर उनमें देश भक्ति की भावना कूट-कूट कर भरी थी। महर्षि के भक्त मंगल पांडे ने एक अंग्रेज सैनिक अफसर को गोली मार दी थी।

मेरठ छावनी में भारतीय सैनिकों का विद्रोह करना इसका प्रमाण है। 1857 की क्रांति का सूत्रपात भी गुप्त रूप से स्वामी दयानन्द ने ही किया था। देश के कोने-कोने में घूमकर वह देश भक्ति की भावना भरकर आजादी का मंत्र फूंक रहे थे। उन्हीं दिनों नानाजी राव पेशवा, कुंवर जोराबर सिंह, तात्या टोपे आदि क्रांतिकारियों से आपकी गहन मंत्रणा हुई थी। **(शेष अगले अंक में)**

आर्यजनों के लिए आह्वान

आर्य भूपाल शर्मा, एमए, साहित्यरत्न
कौशांबी, गाजियाबाद

वस्तुतः विश्ववारा संस्कृति जून 2020 की पत्रिका के सम्पादकीय लेख में आचार्य डॉ. जयेंद्र कुमार ने सटीक उल्लेख किया है कि आजकल मानवता तथा मानवीय मूल्यों का ह्रास अपनी चरम सीमा पर हो रहा है। अपने ही अपनों की उपेक्षा का शिकार हो रहे हैं। इतना ही नहीं वर्तमान समय की विभीषिका को देखते हुए डॉ. प्रणव पंड्या जी ने तो अखंड ज्योति जून 2020 में आह्वान कर लिख दिया है कि मूर्धन्यों जागो औरों से रही नहीं आश।

सभी मूर्धन्य विद्वान, ऋषिगण राष्ट्र के प्रतिजागरूक एवं निष्ठावान पवित्र आत्माएं व्यथित हैं आज की परिस्थितियां देखकर उन्हें कहना पड़ रहा है कि राष्ट्र, समाज एवं मानवता की सेवा ही सबसे बड़ा कर्तव्य है। जब हम स्वामी दयानन्द सरस्वती की बात करते हैं तो क्या हम अपने वर्तमान के क्रिया कलापों से संतुष्ट कह सकते हैं। केवल पांच सात व्यक्तियों की उपस्थिति में आर्य समाज मंदिर के प्रांगण में दैनिक यज्ञ कर लेने मात्र से हम अपनी इतिश्री समझ लेते हैं। अथवा केवल कुछ जनों के मध्य मूर्ति पूजा का विरोध मात्र हमारा ध्येय रह गया है। कहां विलुप्त हो गयी ऋषि दयानन्द की शिक्षा,जीवन का लक्ष्य, उनके जीवन के बलिदान के लक्ष्य की परिकाष्ठा। आर्य समाज की रूप रेखा, कथनी करनी क्यों कुंठित हो गई है। पिछले वर्ष नई दिल्ली में आयोजित अंतरास्ट्रीय सम्मेलन में स्वामी रामदेव समेत अनेक विद्वानों ने आह्वान करते हुए कहा था कि आर्य समाज को वर्तमान में फैली विषमताओं, अंधविश्वासों एवं कुरीतियों को दूर करने के लिए अपने कार्य क्षेत्र में परिवर्तन कर नवीन मार्ग लाने होंगे। जिससे लोगों का उन पर विश्वास हो और वे आर्य समाज से जुड़ सके। खैर इस ओर कोई परिवर्तन देखने को नहीं मिल रहा है।

ऋषि के तत्कालीन समय की परिस्थितियों पर विहंगम दृष्टिपात से आज की परिस्थियां अधिक भयावह दृष्टिगोचर होती हैं। विश्व के पूरे पर्यावरण में व्याप्त कोरोना महामारी। इसमें आर्य समाज का क्या योगदान रहा। क्या हमारा दायित्व नहीं बनता कि हम आर्य मन्दिर के प्रांगण से बाहर निकल कर सभी ब्रह्मचारी, ब्रह्मचारिणी, युवक-युवतियां विद्वानजन विभिन्न अस्पतालों के प्रांगण में यज्ञ का आयोजन कर यज्ञ धूम से कोरोना के वायरस को समूल नष्ट कर देते। जब राष्ट्र में 65 से 70 प्रतिशत युवाओं की ऊर्जा हमारे साथ है तो ऐसी क्या आपदा है जिस पर हम विजय प्राप्त नहीं कर सकते। हमें ऋषि के बताए रास्ते पर चलना है तो हमें झुंड के झुंड बाहर निकल कर मोर्चा सम्भालना होगा। स्वाधीनता आंदोलन में 70 प्रतिशत से अधिक आर्य समाजी थे जिनकी कुर्बानी से स्वतंत्रता की पवित्र वायु में आज आप सांस ले रहे हैं। यजुर्वेद में यज्ञ की महिमा, यज्ञ से कौन सी बीमारी ठीक नहीं हो सकती किंतु विडम्बना हमारे चरित्र की है कि हम प्रधान या मंत्री पद पर आसीन होकर अपनी इतिश्री समझ लेते हैं यह है ऋषि के आदेश की उपेक्षा जो केवल बाहरी आडम्बरों में पूर्णतया परिलक्षित होती है। सभी आर्यजन बाहर निकल कर आये और अधिक से अधिक संख्या में जगह-जगह यज्ञ के धूम के बादल से सारे वातावरण को आवर्त कर कोरोना को समूल नष्ट कर दे।

दूसरा गलवान घाटी में चीन के द्वारा विश्वासघात कर हमारे 20 जवानों को अपनी जान से हाथ धोना पड़ा। पूरे देश में खून खौल रहा है। इस समय में भी आर्य समाज राष्ट्र की भूमिका में अहम योगदान कर सकता है। जगह-जगह विभिन्न आयोजन किये जाएं, यज्ञों का आयोजन किया जाए। सभी को जाग्रत किया जाए कि देश के किसी भी कोने में चीन में बनी वस्तु का प्रयोग न हो पाए। सरकार को बाध्य किया जाए कि आयात शुल्क में कई गुना वृद्धि की जाए जिससे चीन से कोई सामान मंगवाना आसान न हो। सभी जगह आर्यजन ध्यान रखे कि पूरे राष्ट्र में चीन में बनी कोई वस्तु दिखाई न दे। इस कार्य को एक बड़े आंदोलन का रूप दिया जाए और इनका नेतृत्व आर्यजन ही करें।

ऐसे आंदोलन से जहां प्रधानमंत्री जी को आत्मसम्बल मिलेगा उनकी ऊर्जा शक्ति की गुना बढ़ जाएगी। ऐसी पवित्र एवं विलक्षण आत्माएं संसार में व्याप्त राक्षसवर्ति को दूरकर अपने अवतरित जीवन को सफल बनाती हैं। आर्यजनों का यह आंदोलन जहां चीन को यादगार पटखनी देने में सफल होगा वही राष्ट्र में एक नवीन ऊर्जा नवीन चेतना एवं एक नई संस्कृति का उदय होगा जो समस्त विश्व पर अपना आधिपत्य बनाये रखने में पूर्णतः सक्षम होगी।

समाचार - सूचनाएं

- 15 अगस्त भारत वर्ष के 74वें स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर आर्य समाज, आर्ष गुरुकुल, वानप्रस्थाश्रम नोएडा में ध्वजारोहण प्रधान श्री एम.एल. सरदाना द्वारा किया गया। ध्वज गीत गुरुकुल के ब्रह्मचारियों द्वारा किया गया। श्रीमती राज सरदाना द्वारा शहीदों को नमन किया गया। इस अवसर पर उप प्रधान आर्य कै. अशोक गुलाटी द्वारा देश भक्तिके गीत सुनाए गए। आचार्य डा. जयेन्द्र कुमार जी द्वारा ओजस्वी कविता का पाठ किया गया व शहीदों को नमन किया गया। प्रधान जी के उद्बोधन के पश्चात शांति पाठ किया गया।
- 18 अगस्त : नेताजी सुभाष चंद्र बोस स्मृति दिवस पर भावपूर्ण स्मरण किया गया।
- 23 अगस्त : पं. इंद्र विद्यावाचस्पति स्मृति दिवस पर भावपूर्ण स्मरण किया गया।
- 23 अगस्त : योगेश्वर श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के अवसर पर योगेश्वर श्रीकृष्ण के बारे में जानकारी दी गई व उनके बारे प्रचलित भ्रांतियों को दूर किया गया।
- 29 अगस्त : पं. गंगाप्रसाद उपाध्याय स्मृति दिवस पर भावपूर्ण स्मरण किया गया।

विनम्र श्रद्धांजलि

आर्यजगत को भारी क्षति! वैदिक विदुषी, समाजसेविका माननीया पूज्यनीया माता श्रीमती राजकली देवी धर्मपत्नी श्री बलराज सिंह माता आचार्य डा. जयेन्द्र कुमार प्रधानाचार्य आर्ष गुरुकुल नोएडा का स्वर्गवास दिनांक 10 अगस्त 2020 को उनके पैत्रक गांव बड़ावद (जिला-बागपत) में हो गया। अन्त्येष्टि पूर्ण वैदिक रीति-रिवाज से की गई। माताजी के निधन से आर्य जगत की अपूरणीय क्षति हुई है। ईश्वर उनकी आत्मा को शांति एवं सद्गति प्रदान करें तथा परिवारजनों एवं हम सभी बंधु बांधवों को इस दारुण दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करें। माता जी अपने पीछे भरा पूरा परिवार छोड़कर गई हैं। आर्यसमाज, आर्ष गुरुकुल, वानप्रस्थाश्रम नोएडा के सभी सदस्यों, अधिकारियों की ओर से भावभीनी विनम्र श्रद्धांजलि एवं शत-शत नमन!!

आर्य जगत मयूर विहार फेस-1 की महिला समाज की उपप्रधान श्रीमती प्रभा रखेजा धर्मपत्नी श्री अमीर चन्द्र रखेजा का निधन 13 अगस्त 2020 को हो गया। उनका अंतिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति-रिवाज से लोधी रोड शमशान घाट पर किया गया। ईश्वर माताजी की आत्मा को सद्गति व शांति प्रदान करें। आर्यसमाज, आर्ष गुरुकुल, वानप्रस्थाश्रम नोएडा के सभी सदस्यों, अधिकारियों की ओर से भावभीनी विनम्र श्रद्धांजलि एवं शत-शत नमन!!

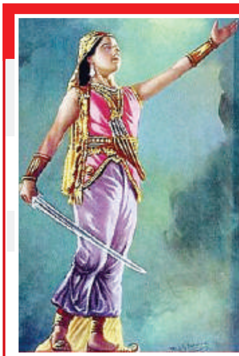

1857 की क्रांति

नाना साहिब पेशवा की दत्तक पुत्री

बाल बलिदानी कुमारी मैना

13 वर्षीय कुमारी मैना को

अंग्रेजों ने पेड़ से बांधकर जला दिया

बलिदान दिवस : 3 सितम्बर 1857

आर्यसमाज, आर्ष गुरुकुल, वानप्रस्थाश्रम नोएडा के सभी सदस्यों, अधिकारियों की ओर से भावभीनी विनम्र श्रद्धांजलि एवं शत-शत नमन!!

विशेष निवेदन : आर्य समाज नोएडा के अन्तर्गत आर्ष गुरुकुल शिक्षा का उत्कृष्ट केंद्र पिछले कई वर्षों से क्रियाशील है और ब्रह्मचारियों को कोरोना महामारी के कारण संस्था में सहयोग प्राप्त नहीं हो पा रहा है। सरकार की ओर से किसी प्रकार का अनुदान संस्था को नहीं प्राप्त होता। आप जैसे क्रियाशील महानुभावों जो भारतीय वैदिक संस्कृति के पोषक हैं, उन्हीं द्वारा सहयोग मिलता है।

अतः आपसे अनुरोध है कि अपना आशीर्वाद बनाए रखें व यथासंभव सहयोग प्रदान करें। संस्था को 17 X 80 G की सुविधा प्राप्त है, जिसे आप ले सकते हैं।

चैक/मनीआर्डर 'आर्यसमाज' के नाम भिजवाएं अथवा आप लोग सीधे ही 'यूनाइटेड बैंक ऑफ इंडिया', नोएडा सेक्टर-33 में खाता संख्या A/C No. 1483010100282, IFSC- UTB10SCN560 में जमा करा कर रसीद की प्रतिलिपि निम्न पते पर भेजें।

■ प्रबंध संपादक, 'विश्ववारा संस्कृति', आर्य समाज, बी-69, सेक्टर-33, नोएडा (उ.प्र.) मोबाइल : 9871798221, 7011279734

रामायण - सार

स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती

श्री रामचन्द्रजी के भक्तों! दिन-रात रामायण के पढ़नेवालों! महाराज रामचन्द्रजी को अपना बड़ा माननेवालों! देश के क्षत्रियजनों! आप रामायण को, जो आर्यकुलभूषण, क्षत्रिय-कुलदिवाकर, वेदवित्, वेदोक्त कर्मप्रचारक, देशरक्षक, रघुकुलभानु, दशरथात्मज, महाराजाधिराज महाराज रामचन्द्रजी का जीवन-चरित सदा पढ़ते-सुनते हैं, परंतु शोक है कि आप उस महानुभाव के दिव्य जीवन से कुछ भी लाभ नहीं उठाते। महाशयों! यह रामचरित्र ऐसा उत्तम है कि यदि मनुष्य इसके अनुसार अपना जीवन व्यतीत करें तो अवश्य मुक्ति-पद को प्राप्त हो जाय।

महाशयों! रामायण के आदि में महाराज रामचन्द्रजी के जन्म का वृत्तांत लिखा है, जिससे बोध होता है कि हमारे देश के राजाओं को जब संतान की आवश्यकता होती थी तब वे लोग विद्वान् ब्राह्मणों को बुलाकर यज्ञ कराते थे। इस समय के लोगों की भांति गाजीमियां की कब्रों में जाने और पूजा करने के ढकोसले नहीं करते थे। वे कभी संडों-मुष्टण्डों से संतान न चाहते थे। वे गूगापीर और मसानी को नहीं मानते थे। वे टोने और धागे नहीं कराते थे। ये सब शिक्षाएं आपको महाराज रामचन्द्रजी के जन्म से प्राप्त होती हैं।

हे रामायण के पढ़नेवालों! ऐसी मूर्खता की बातों को शीघ्र त्यागकर यज्ञादि कर्म प्रारम्भ करो। पुन: महाराज का वशिष्ठजी से विद्याभ्यास करना है, जिससे बोध होता है कि पूर्व-समय में सभी क्षत्रिय, ब्राह्मण और वैश्य-द्विजातिमात्र पढ़ते थे। आजकल की भांति ऐसा न था कि विद्योपार्जन को आजीविका के लिए समझें, अपितु विद्याभ्यास मनुष्यत्व का हेतु माना जाता था। मूर्ख को मनुष्य की संज्ञा ही नहीं मिलती थी। हे रामायण के पढ़नेवालों! शीघ्र विद्याभ्यास करो और उस वेद-विद्या को पढ़ो जिसे महाराज रामचन्द्रजी ने पढ़ा था। उस वेद-ज्ञान को समस्त संसार में फैलाओ। तत्पश्चात् महाराज रामचन्द्रजी का विश्वामित्र के साथ जाना है, जो इस बात का पूरा प्रमाण है कि पूर्व-समय में विद्वानों और तपस्वियों का कैसा मान था! देखो, राजा दशरथ ने प्राणों से अधिक प्यारे अपने दोनों पुत्र विश्वामित्र को दे दिये। दूसरे, उस काल में क्षत्रियों के बालक ऐसे बली होते थे कि रामचन्द्रजी छोटी-सी अवस्था में भी ऋषि के साथ वन जाने से भयभीत नहीं हुए और दोनों भाइयों ने सहस्रों दुष्ट राक्षसों को मार गिराया। ब्रह्मचर्य, विद्या और धर्म के ऐसे प्रताप को देखकर भी हम लोग धर्म नहीं करते।

तत्पश्चात् रामचन्द्रजी का जनकपुर में जाकर धनुष तोड़ना लिखा है। इससे भी उनके बल की महिमा विदित होती है। इसके पश्चात् महाराजा रामचन्द्रजी के विवाह का वृत्तांत है, जिससे यह विदित होता है कि उस काल में स्वयंवर की रीति थी। आजकल की भांति गुड्डे-गुडियों का विवाह, अर्थात बाल-विवाह का प्रचार न था। कन्या और वर दोनों ब्रह्मचर्य का पालन करते थे और जब वे पूर्ण विद्वान और बल-वीर्य में पुष्ट हो जाते थे तब विवाह करते थे, जिससे पति और पत्नी में सदा प्रीति रहती थी और उनके गृहस्थाश्रम सुख से व्यतीत होते थे तथा संतान हृष्ट-पुष्ट और शुद्ध बुद्धिवाली उत्पन्न होती थी। रामायण के माननेवालों! आप क्यों बालविवाह करके अपनी संतान को नष्ट करते हो?

इसके पश्चात् महाराज को राज मिलने का लेख है और कैकेयी के आदेश से महाराज का वन को जाना और दशरथ महाराज की मृत्यु लिखी है। इससे क्या ज्ञात होता है? प्रथम तो यह कि नीच के संग से सदा हानि होती है। देखो, कैकेयी ने मंथरा के संग से अपना सुहाग नष्ट किया। संसार को दु:ख दिया, जगत् में अपयश लिया। जिस पुत्र के लिए यह अधर्म किया था, उस पुत्र ने भी उसको बुरा कहा। क्या इससे कुसंग से बचने की शिक्षा नहीं मिलती? जो लोग अधर्म करते हैं उनके घर के लोग भी उन्हें बुरा कहते हैं। दूसरे, महाराज दशरथ ने राज्य त्याग दिया, अपने प्यारे, नंहीं-नंहीं नयनों के तारे पुत्र को चौदह वर्ष का वनवास दिया, अपने प्राणप्रिय पुत्र का वियोग स्वीकार किया, परन्तु अपना वचन नहीं तोड़ा।

जिससे संसार भर में यश लिया और संसार को यह शिक्षा दी कि मनुष्य को जो कुछ किसी को देना हो शीघ्र दे दे, परन्तु किसी से प्रतिज्ञा न करे, न जाने कब कैसा समय आ जाए! क्योंकि, राजा दशरथ कैकेयी को यदि वर न देते तो उनको यह कष्ट और पुत्र का वियोग न सहना पड़ता। यहां बन्धुओं, बहुत-सी शिक्षाएं मिलती हैं, जैसे अंधे माता-पिता अपने पुत्र श्रवण की मृत्यु से मर गये। इसी के फल से राजा दशरथ भी अपने पुत्र के वियोग से मरे। ■■

योग से ठीक होता है सरवाईकल स्पांडलाइटिस

योग चिकित्सा गर्दन दर्द के प्रबंधन में अत्यंत सहायक है

लगातार काम करने से अक्सर गर्दन में दर्द, सर्वाइकल की परेशानी हो जाती है

गर्दन पर कालर बांधे अक्सर लोगों को देखा जा सकता है। यह गर्दन में होने वाले दर्द से बचने के लिए डाक्टरों की ओर से किया जाने वाला उपाय है। गर्दन में दर्द का इलाज योग में सदियों से बताया जा रहा है जिसके प्रयोग व अभ्यास करने से गर्दन की तकलीफ से मुक्ति मिल जाती है।

योग चिकित्सा गर्दन दर्द के प्रबंधन में अत्यंत सहायक है। यदि प्रारंभिक अवस्था में गर्दन दर्द का निदान हो जाए तो योग से गर्दन के स्नायु, पेशियों आदि की विकृति को सुधारा जा सकता है तथा गर्दन की स्थिति को पुनवयर्वस्थित किया जा सकता है। इनमें है ग्रीवा शक्ति विकासक, स्कंध चालन, भुजवल्ली शक्ति विकासक, भुंजगासन, धनुरासन व उष्ट्रासन का अभ्यास उपयोगी होता है। इसके अतिरिक्त रेचक पूरक प्राणायाम, भ्रामरी प्राणायाम करे। इसके अलावा ओम का बारम्बार उच्चारण पीड़ा को कम करता है। गर्दन की मांसपेशी में तनाव या गर्दन की हड्डियों में बदलाव आने पर डिस्क प्रोलेप्स्ड 70 प्रतिशत, सरवाईकल 6 डिस्क को प्रभावित करता है जो सरवाईकल 7 पर प्रभाव डालता है। यदि गर्दन के साथ साथ दर्द कंधे व बांह में महसूस होता है तो गर्दन के सी 4 व सी 5 में विकृति एक्सरे रिपोर्ट में आती है। जब गर्दन, कंधे व एक भुजा व हाथ की अंगुलियों में दर्द महसूस हो तो एक्सरे में सी 5 व सी 6 में विकृति आती है। कभी-कभी गर्दन दर्द के प्रमुख कारण वाहन चलाते समय अचानक ब्रेक लगाने पर गर्दन पर जोर का झटका लगना या बाह्य आघात लगना, ऑस्टियोपोरोसिस होना, नियमित गर्दन आगे झुकाकर काम करना, ऊंचा मोटा तकिया लगा कर सोना, भारी सामान उठाने पर शारीरिक असंतुलन आना आदि होता है।

योगासन से आपका सर्वाइकल ठीक हो सकता है। कई बार ऑफिस में लगातार बैठने से कंधे दर्द करने लगते हैं। यह तकलीफ धीरे-धीरे सर्वाइकल का शिकार बना देती है। ऐसे में योगासन करते रहने से इससे बचा जा सकता है। दफ्तर में लगातार काम करने से लोगों को अक्सर गर्दन में दर्द, सर्वाइकल की परेशानी हो जाती है। बाद में उन्हें गर्दन में पट्टा लगाना पड़ता है। यह परेशानी धीरे-धीरे बढ़कर कंधों को जाम कर देती है। इसलिए हाथों को मोड़कर कंधों पर रखकर उन्हें क्लॉकवाइज घूमाइए। ऐसा दिन में कई बार किया जा सकता है। इससे शरीर काफी रिलेक्स होगा। हाथों को सिर के पीछे रखकर थोड़ा जोर लगाने से भी गर्दन को आराम मिलता है। इससे सर्वाइकल के दर्द को घटाने में काफी मदद मिलती है। ■■

आर्यसमाज के दस नियम

सब सत्यविद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं, उन सबका आदि मूल परमेश्वर है।

⌘⌘⌘⌘⌘⌘

ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्ता है, उसी की उपासना करनी योग्य है।

⌘⌘⌘⌘⌘⌘

वेद सब सत्यविद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।

⌘⌘⌘⌘⌘⌘

सत्य के ग्रहण करने और असत्य को छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।

⌘⌘⌘⌘⌘⌘

सब काम धर्मानुसार अर्थात सत्य और असत्य को विचार करके करने चाहिए।

⌘⌘⌘⌘⌘⌘

संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।

⌘⌘⌘⌘⌘⌘

सबसे प्रीतिपूर्वक धर्मानुसार यथायोग्य वर्तना चाहिए।

⌘⌘⌘⌘⌘⌘

अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए।

⌘⌘⌘⌘⌘⌘

प्रत्येक को अपनी ही उन्नति से संतुष्ट न रहना चाहिए, किन्तु सबकी उन्नति में ही अपनी उन्नति समझनी चाहिए।

⌘⌘⌘⌘⌘⌘

सब मनुष्यों को सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने में परतन्त्र रहना चाहिए और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतन्त्र रहें।

घोषणा पत्र संख्या : 153/2016-17 पंजीकरण संख्या : UPMUL/2016/76974 Postal Registration No.- UP/GBD- 249/2020-2022 Date of Dispatch 12 Every Month

ओ३म्

स्वराज्य के प्रथम उद्घोषक महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती

जब स्वराज्य का मंदिर बनेगा तब उसमें सबसे ऊंचा स्थान महर्षि दयानन्द का होगा

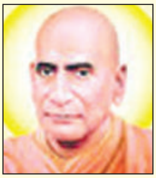

स्वामी श्रद्धानंद सरस्वती
(1856-1926)
सत्य को ही अपना ध्येय बनाएं और दयानन्द को अपना आदर्श बनाएं

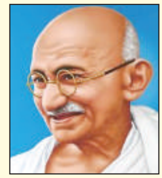

महात्मा गांधी
(1869-1948)
मैं जैसे-जैसे आगे बढ़ता हूं वैसे-वैसे मुझे महर्षि दयानन्द का मार्ग दिखाई देता है

सुभाष चन्द्र बोस
(1897-1945)
आधुनिक भारत के आद्य निर्माता तो महर्षि स्वामी दयानन्द ही हैं

लाल बहादुर शास्त्री
(1904-1966)
महर्षि ने स्वदेशी और स्वराज्य की ऐसी लहर चलाई जिससे इंडिया नेशनल कांग्रेस की पृष्ठभूमि बन गई

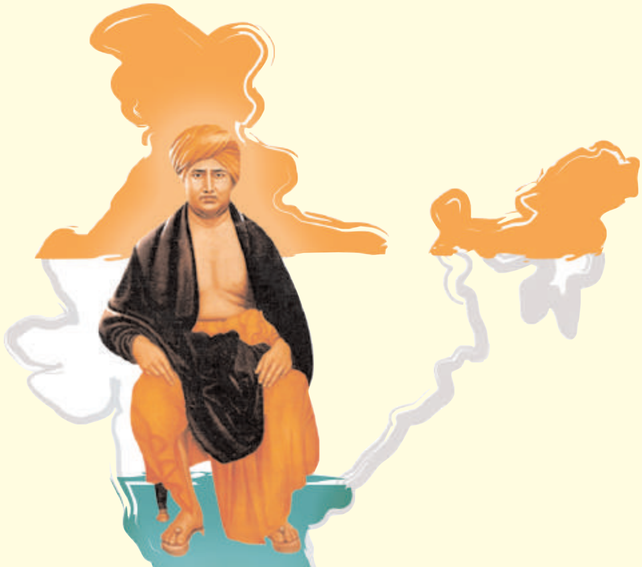

- महर्षि दयानन्द पहले राष्ट्र पुरुष थे जिन्होंने देशवासियों को पूर्ण स्वराज्य प्राप्ति की प्रेरणा दी। इन्होंने कहा था- 'कोई कितना भी करे लेकिन स्वदेशी राज्य ही सर्वोपरि उत्तम होता है।'
- हम और आपको अति उचित है कि जिस देश के पदार्थों से अपना शरीर बना, अब भी पालन होता है, आगे होगा, उसकी उन्नति तन, मन, धन से सब जने मिलकर प्रीति से करें।
- किसी संस्कृत ग्रन्थ व इतिहास में नहीं लिखा कि आर्य लोग ईरान से आए और यहां के जंगलियों से लड़कर जय पाके तत्काल इस देश के राजा हुए, पुनः विदेशियों का लेख माननीय कैसे हो सकता है?
- जब से विदेशी मांसाहारी इस देश में आ के गौ आदि पशुओं के मारने वाले, मद्यपायी राज्याधिकारी हुए हैं (भारतीयों) के दुखों की बढ़ती होती जाती है।

शहीद भगत सिंह
(1907-1931)
म्हारे विचार तथा मानसिक विकास अधिकांश आर्यसमाज की देन है

लाला लाजपत राय
(1865-1928)
महर्षि मेरे गुरु हैं, मुझे स्वतंत्रता पूर्वक विचारना, बोलना और कर्तव्य पालन करना सिखाया

शहीद रामप्रसाद बिस्मिल
(1897-1927)
आर्य समाज मेरी मां है और महर्षि दयानन्द मेरे गुरु हैं

सरदार बल्लभ भाई पटेल
(1875-1950)
भारत की स्वतंत्रता की नींव रखने वाले वास्तव में स्वामी दयानन्द ही थे

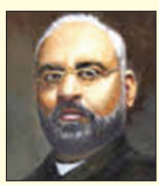

श्यामजी कृष्ण वर्मा
(1857-1930)
मैंने जो प्राप्त किया है उसमें सबसे बड़ा हाथ उस युगद्रष्टा महर्षि का है

लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक
(1856-1920)
स्वराज्य और स्वदेशी का सर्वप्रथम मंत्र प्रदान करने वाले जाज्वल्यमान नक्षत्र थे दयानन्द

ओ३म् विश्ववारा संस्कृति ओ३म्
आर्य समाज, बी-69, सेक्टर-33, नोएड़ा (उ.प्र.) दूरभाष : 0120-2505731, 9871798221